# सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-41, अंक-07, कुल पृष्ठ-36, चैत्र-वैशाख, विक्रम सम्वत् 2080-81, अप्रैल, 2024

## नव संवत्सर 2081 की हार्दिक शुभकामनाएं

# पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठको!

इन दिनों यह अनुभव हम और आप प्रतिदिन कर रहे हैं। हर वस्तु का मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे रोजमर्रा का सामान हो या लिखने-पढ़ने की सामग्री-हर चीज की कीमत कई गुनी बढ़ चुकी है। कागज महंगा हो गया है, छपाई महंगी हो गई है। पिछले दो-तीन माह से पत्रिका रंगीन छप रही है। स्वाभविक रूप से इन सबका असर आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'सेवा समर्पण' पर भी पड़ रहा है। किन्तु पाठकों ध्यान में रखते हुए 'सेवा समर्पण' के मूल्य में पिछले कापी समय से कोई वृद्धि नहीं की गई। सुचारू रूप से चलाने के लिए पर अब लग रहा है कि यह आवश्यक है। इसलिए अब एक अंक का मूल्य 20 रु., वार्षिक 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रु. किया जा रहा है। यह वृद्धि अप्रैल, 2024 के अंक से लागू होगी।

आशा है सुधी पाठक पूर्व की तरह आगे भी अपना अमूल्य सहयोग देते रहेंगे।

**– सम्पादक**

## स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

गत 14 मार्च को 'विश्व किडनी दिवस' के अवसर पर एक 'जागरूकता कार्यक्रम' सेवा भारती सभागार बढ़ेरा भवन, अशोक विहार में दोपहर 3.00 बजे से 4.00 बजे तक माइक्रोलैब के सौजन्य से आयोजित किया गया। इसमें डॉ. दीपक जैन वरिष्ठ किडनी रोग विशेषज्ञ द्वारा व्हाट्सएप ऑडियो तथा मैसेज द्वारा डायलिसिस रोगियों को अपनी देखभाल के संदर्भ में विस्तार से बताया गया और जन सामान्य को भी अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना एवं खान-पान संबंधित अपनी आदतों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यक्रम में प्रमुख कार्यकर्ता, डायलिसिस रोगियों के परिचारक, ड्यूटी डॉक्टर (डॉ. निरंजन जी) और प्रियंका कॉर्डिनेटर भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित सहभागियों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई और कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

## बच्चों ने मनाया जन्मदिन

सेवा भारती द्वारा संचालित, झण्डेवाला विभाग, मुखर्जी नगर जिला, रविदास नगर, में माननीय बाला साहब देवरस सेवा केन्द्र में बच्चों ने अपना जन्मदिन मनाया। इसके लिए बच्चों ने कुछ विशेष तैयारियां की थीं। आज सेवा भारती का कार्य एक वटवृक्ष की तरह है। प्रथम केन्द्र की शुरुआत यहीं से हुई थी।

## चिकित्सा शिविर का आयोजन

सेवा भारती पूर्वी विभाग, गांधी नगर जिले में 18 मार्च को माधव सेवा केन्द्र, चित्रा विहार पर एक हेल्थ कैंम्प एक्यूपंक्चर और एक्यूप्रेशर न्यूट्रास्युटिकल ग्रीन थेरेपी पर आधारित रहा। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष विजय जी, मंत्री पंकज जैन, बहन समिति अध्यक्ष सविता जी, सहमंत्री हरेन्दर जी, शिक्षिका और निरीक्षिका उपस्थित रहे। इसमें 20 व्यक्तियों ने फुल बॉडी चेकअप करा कर स्वास्थ्य लाभ लिया। ❐

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

*सम्पादक*
डॉ. शिवाली अग्रवाल

**कार्यालय**
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

# सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-07, कुल पृष्ठ-36, अप्रैल, 2024

## विषय - सूची


| शीर्षक | लेखक | पृ. |
|---|---|---|
| संपादकीय | | 4 |
| ऊर्जावान हिंदू समाज के शिल्पकार | प्रो. राकेश सिन्हा | 5 |
| जय जयति विक्रमादित्य | डॉ. केदारनाथ प्रभाकर | 11 |
| इतिहास के परिप्रेक्ष्य में नव संवत्सर | एफ.सी. भाटिया | 12 |
| विज्ञान सम्मत है भारतीय नववर्ष | अरुणिमा देव | 13 |
| सेवा विभूति सम्मेलन | | 15 |
| डॉ. अम्बेडकर की नारी दृष्टि : एक विवेचन | डॉ. प्रवेश कुमार | 16 |
| इतिहास सिद्ध महापुरुष | प्रतिनिधि | 18 |
| दो पेड़ | गंगा प्रसाद सुमन | 21 |
| जानें प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना को | अन्वी जैन | 22 |
| मैं देखूँ | सरोजिनी चौधरी | 23 |
| गरिमा के स्वर : कवयित्री सम्मेलन | | 24 |
| परिवार मिलन कार्यक्रम | | 25 |
| होली मिलन कार्यक्रम | | 26 |
| सोनिया ऐसे बनी शिक्षिका | नीतू शर्मा | 27 |
| सामूहिक विवाह के समाचार | | 28 |
| बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर संपन्न | | 30 |
| यह है नवरात्र का संदेश | अंजली अंश | 33 |
| चैत्र नवरात्रे | कारुन्या | 34 |


## पाठकों से अनुरोध

**सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।**

**पता : संपादक, सेवा समर्पण,**
**13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001**
**दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org**

# नव वर्ष की शुभकामनाएँ

इस वर्ष 9 अप्रैल, मंगलवार से हिंदू नव वर्ष यानी विक्रम संवत् 2081 प्रारंभ हो रहा है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होने वाला यह नव वर्ष वैज्ञानिक के साथ ही सर्वाधिक प्राचीन भी है। सनातन संस्कृति में इसका बहुत अधिक महत्व है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा जी द्वारा जगत्-सृष्टि का निर्माण किया गया था।

ब्रह्मपुराण के इस यथार्थ को मानने वाले इसी दिन को प्रथम दिन, नव दिन मानते हैं और उसी दिन हर्ष और उल्लासपूर्वक नए वर्ष का प्रारंभ मानते हैं। यह एक वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक सत्य है। सम्राट विक्रमादित्य ने भी इसी दिन अपने विक्रम नवसंवत्सर को प्रारंभ किया था, जो आज भी उसी सम्मान के साथ भारतीय संस्कृति में स्वीकृत है और वर्ष भर के समस्त कार्य इसी परंपरा पर इस संवत् से संबंधित तिथियों पर ही मनाए जाते हैं। हमारे अवतारी पुरुषों की जयन्तियाँ और विशिष्ट महापुरुषों के जन्म दिन उसी आधार पर माने जाते हैं। एक प्रकार से कालगणना का समस्त उपक्रम तथा उसका केन्द्रबिन्दु इन भारतीय तिथियों पर ही आधारित है। चन्द्रमा की पूर्णता पूर्णिमा को और उसी की लुप्तता अमावस्या तिथि को सुनिश्चित है और वर्ष भर यही क्रम चलता रहता है। श्रीराम का अवतरण नवमी के दिन निश्चित है और श्रीकृष्ण का पदार्पण अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि में होता है। इसी प्रकार अन्य पर्व भी हैं और उन्हीं तिथियों में प्रतिवर्ष मनाए जाते हैं। हरिद्वार का कुम्भ महापर्व समुद्र मंथन काल से ही मेष संक्रांति प्रवेश पर आयोजित किया जाता है तथा प्रयागराज का महाकुम्भ पर्व मौनी अमावस्या पर सर्वमान्य है। विश्व के असंख्य नर-नारी पता नहीं किस स्वयंप्रेरित आस्था की डोर में बँधे हुए चले आते हैं। यह सब हमारी पंचांग परंपरा पर ही आधारित है जिसका शुभारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही होता है।

जब यह सुनिश्चित है कि हमारा एक अपना इतिहास है, अपनी एक परंपरा है, अपनी मान्यताएँ हैं और उसका एक अस्तित्व है और परम सात्विक अस्तित्व, जिसके वशीभूत होकर हम 'विश्वं भवति एक नीडम्' की परम उदात्त मनोवृत्ति का आश्रय लेकर सद्वृत्तियों की सर्जनात्मकता में चिरस्थित रहते हुए अनेकत्व में एकत्व का दर्शन करते हैं और सृष्टि रचना के प्रथम दिन अर्थात् नववर्ष में उस दिव्यता के आश्रित होकर 'संगच्छध्वम् संवदध्वम् संवो मनांसिजानताम्' के यथार्थ उद्घोष को करते हुए संवत्सर की उपासना करते हैं।

यही नववर्ष का दिव्य उल्लास बंधन में जकड़े अंग प्रत्यंग को सक्रिय बना देता है और रहस्य पर से परदा उघाड़ देता है और हम मंगल कामना से अभिभूत हो जाते हैं।

विडंबना यह है कि आज भारतीयता के नाम पर जो कुछ भी है वह उपेक्षित हो रहा है और इस उपेक्षा का शिकार बन रही हैं भारतीय परम्पराएँ, भारतीय मान्यताएँ, भारतीय विचारधाराएँ और भारतीय परिवेश, आज हमें उसमें पता नहीं एक अनजानी केवल मानी हुई वितृष्णा केवल एक दम्भ के आधार पर पनप रही है। हम सब कुछ भूलते चले जा रहे हैं। आज हमें भारतीय तिथियाँ विस्मृत हो गई हैं। धीरे-धीरे एक-एक दिन कम ही होती जा रही है।

मंगल दीप जलाकर, पंचदेवों की पूजा कर, पूरे वर्ष की गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले तिथि, वार, नक्षत्र, ग्रह, राशि आदि के नाम को भी भूलकर केवल विदेशी नामों, तिथियों आदि को जीवन का संबल बनाकर और उन्हीं की परंपराओं का पालन कर एक जनवरी को नववर्ष मनाते हैं और उसकी पूर्व रात्रि में तथा अर्धरात्रि में भोंडे प्रकार के अश्लील गानों और चेष्टाओं द्वारा नए वर्ष के भौतिक जगत् में प्रवेश कराने के प्रयास को सर्वोत्तम मानते हैं, जबकि उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की महिमामयी स्वीकृति हमारे चरित्र को पुनः समुज्ज्वल बना सकेगी और भारत पुनः जगद्गुरु की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा।

आइए, इस नव वर्ष पर संकल्प लें कि हम अपनी परंपरा, मान्यता को अपनाएंगे और विदेशी विचारों से दूर रहेंगे। नव वर्ष की अशेष शुभकामनाएँ! ❐

# ऊर्जावान हिंदू समाज के शिल्पकार

■ प्रो. राकेश सिन्हा, सांसद (राज्यसभा)

21 अक्तूबर, 1938 को अखिल भारतीय कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस ने महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष शंकरराव देव को एक पत्र लिखा। दो पृष्ठों के पत्र का विषय था- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बढ़ता आधार। बोस की चिंता का विषय था कि कांग्रेस का आधार संघ की ओर खिसकता जा रहा है। छात्र-नौजवानों में संघ के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। इसका कारण क्या है, इसके बारे में वे किसी सुनिश्चित मत के नहीं थे। देव ने 6 नवम्बर, 1938 को इसका विस्तार से जवाब दिया। अपनी समझ के अनुसार विश्लेषण करते हुए उन्होंने लिखा कि संघ देश की जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर अपनी विचारधारा का प्रतिपादन कर रहा है वह लोगों को आकर्षित कर रही है। बोस के इस सवाल का कि कांग्रेस क्यों नहीं इस तरह का स्वयंसेवी संगठन बना सकती है, देव ने लिखा कि जो काम डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने किया, वह कांग्रेस में सम्भव नहीं है। उन्होंने इसका कारण बताया कि कांग्रेस का प्रत्येक नेता या गुट स्वयंसेवकों का उपयोग अपने विचार, राजनीति और हित के लिए करना चाहता है, जबकि संघ की कार्य संस्कृति में संगठन एक उद्देश्य और एक मिशन के लिए काम करता है। आगे उन्होंने लिखा कि ऐसा स्वयंसेवी संगठन बनाने के लिए पर्याप्त धन चाहिए।

बोस एवं देव दोनों ही कांग्रेस के सुलझे, समर्पित और स्वार्थहीन कार्यकर्त्ता थे। परन्तु वे संघ को बाहर से ताक-झांककर और तात्कालिक हित-अहित के आधार पर देख रहे थे। लेकिन संघ की बढ़ती ताकत, जो उन्हें

प्रतिस्पर्द्धी 1938 में नजर आ रहा था वह यथार्थ नहीं था। संघ तो स्थापना के दिन से अपनी राह पर चलता रहा है जिसमें राष्ट्रीयता के संवर्द्धन का लक्ष्य रहा है। दूसरे लोग और संगठन अपने हित-अहित के आधार पर संघ को मापते रहे हैं। इसलिए समर्थन-विरोध की प्रक्रिया समय, स्थान सापेक्ष रही है। तभी तो मात्र दो वर्ष के बाद बोस जब नागपुर में फारवर्ड ब्लॉक के अधिवेशन में आये तो उनके कार्यक्रम का अगला पड़ाव संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार से साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन में परस्पर सहयोग के लिए परामर्श हेतु मुलाकात थी। नागपुर से प्रकाशित समाचार पत्र 'हितवाद' ने अपने 23 जून, 1940 के अंक में प्रथम पृष्ठ पर बोस का डॉ. हेडगेवार से मुलाकात की इच्छा का समाचार प्रकाशित किया। वे 20 जून को डॉक्टर जी से मिलने आये, परन्तु उनकी अस्वस्थता के कारण दोनों में बात नहीं हो पायी। अगले ही दिन 21 जून को डॉक्टर जी का निधन हो गया। उनके निधन से महाराष्ट्र और देश के अन्य भागों में शोक की लहर दौड़ गयी। अपने जीवनकाल में इस अजातशत्रु ने सामाजिक सार्वजनिक जीवन में व्याप्त अनेक भ्रमों को तोड़ने का कार्य तो किया ही, मृत्यु के पश्चात् भी एक बड़े भ्रम को तोड़ दिया।

डॉ. हेडगेवार और संघ एक-दूसरे के पर्याय थे। जब कभी भी किसी प्रभावशाली व्यक्ति का निधन होता है तो उससे जुड़ी संस्था को अपूरणीय क्षति का सामना करना पड़ता है। संघ के बारे में भी इसके मित्र और ईर्ष्यालु भाव से पीड़ित, दोनों प्रकार के लोग ऐसा ही सोचते थे। परन्तु सार्थक उद्देश्य के लिए समर्पित इस सारथी ने संघ को कालजयी बना दिया। तभी तो लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित अंग्रेजी समाचार पत्र 'मराठा' ने 23 अगस्त, 1940 को अपने प्रथम पृष्ठ पर जो पहला बड़ा समाचार प्रकाशित किया उसका शीर्षक था-'डॉ. हेडगेवार्स संघ स्टिल गोइंग स्ट्रांग।'

जब व्यक्ति साधना पथ पर साध्य के लिए अपने आपको साधन बना देता है तो उसका हर दृष्टांत, उसकी हर बात, उसके जीवन की हर घटना विचार का लौहपुंज बन जाती है और वह इतिहास नहीं, हमेशा वर्तमान रहता है। वह पीढ़ियों को प्रेरित करता है। डॉ. हेडगेवार भी वैसे ही द्रष्टाओं में एक हैं, जो पथ पर चलते-चलते स्वयं पथ बन गए हैं। यही कारण है कि उनके निधन के बाद महाराष्ट्र के अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में उन बुनियादी प्रश्नों पर बहस शुरू हो गयी जिनको आधार बनाकर डॉ. हेडगेवार ने संघ की स्थापना की थी। अकोला से एक अखबार 'मातृभूमि' प्रकाशित होता था। इसके मालिक कांग्रेस के नेता बृजलाल बृयानी थे और प्रमिला ओक सम्पादिका थीं। संघ के प्रति ईर्ष्या भाव रखने वाले इस अखबार ने अपने सम्पादकीय में दो प्रश्नों को सबसे अधिक विचारणीय माना। पहला, डॉ. हेडगेवार की राष्ट्रीयता की कल्पना और दूसरा, उनका सार्वजनिक जीवन में योगदान। ओक ने लिखा कि डॉ. हेडगेवार जैसे समर्पित, स्वार्थहीन, कलंकरहित कार्यकर्त्ता मिलना मुश्किल है और उन्होंने सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के लिए एक मापदंड छोड़ा है। संगठन कालजयी सिर्फ कल्पना मात्र से या विचार प्रवाह से नहीं होता है। डॉ. हेडगेवार इस बात से सुपरिचित थे। जब पीढ़ी दर पीढ़ी निश्छल भाव से मूल्यों के आइने में प्रयोगधर्मिता के साथ विचार के प्रवाह में शामिल हो जाती है तब संगठन का फलक जो दिखायी पड़ता है वही नहीं होता है। उसका फलक बड़ा हो जाता है। उसकी संरचना समावेशी हो जाती है। उसमें स्वायत्तता और स्वचालन का बोध आ जाता है। व्यक्ति निमित्त हो जाता है। ऐसा कैसे हो, यह प्रश्न डॉक्टर जी के सामने था। उन्होंने सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के नाते समाज को प्रयोगशाला के रूप में देखा एवं समाजशास्त्री तथा समाज विज्ञानी के रूप में घटनाओं और विचारों को सतत् तौलते रहे।

उनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों में मध्य प्रांत कांग्रेस ने उन पर एक अहम जिम्मेदारी सौंपी थी। घटना 1919 की है। तब वे कलकत्ता से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी कर नागपुर आ चुके थे। उनकी पहचान एक चिकित्सक की जगह एक प्रतिबद्ध राष्ट्रवादी की बन चुकी थी। उन्होंने परिवार बसाने, पैसा अर्जित करने, प्रतिष्ठा पाने, पुष्पहार पहनने जैसी सभी सम्भावनाओं का स्वयं सुव्यवस्थित एवं सुविचारित रूप से अंत करना शुरू कर दिया था। ऐसा लग रहा था कि राष्ट्रीयता की देवी सही पात्र की खोज में शताब्दियों से थी और डॉ. हेडगेवार के तन, मन, मस्तिष्क में प्रवेश कर हिन्दू सभ्यता के पुनरोदय और पराक्रम के लिए उन्हें तैयार कर रही हो। तभी तो उनका एक-एक कदम असामान्य होता था। हर कदम के पीछे सूत्र और सारगर्भित विचार होता था। उनके व्यक्तित्व में सोने की तरह चमक ने हर असाध्य कार्य के लिए उनकी पात्रता स्थापित की। इसी क्रम में मध्य प्रांत कांग्रेस ने 1 फरवरी, 1919 को सर्कुलर जारी किया जिसमें

हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका 'संकल्प' के प्रकाशन की योजना थी। मध्य प्रांत के 18 जिलों में 14 हिन्दीभाषी जिले थे। इनके लिए कांग्रेस के विचार-कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार के लिए कोई अधिकृत पत्र-पत्रिका तब तक नहीं थी। छह हजार रुपए संकल्प की अग्रिम सदस्यता के द्वारा इकट्ठे करने थे। प्रत्येक जिले में 50 ग्राहक बनाने का लक्ष्य था। जब डॉ. हेडगेवार को इस चुनौती से जूझने के लिए कहा गया तो उन्होंने एक बुनियादी प्रश्न उठाया-'अग्रिम चंदा/धन लेकर कुछ महीने या वर्षों में पत्र-पत्रिकाएं बंद होती रही हैं, इससे लोगों का विश्वास उठ गया है। प्रामाणिकता पर प्रश्न उठाया जाता है। अच्छा होता पहले हम पत्रिका का प्रकाशन कर ग्राहक बनाते।' परन्तु कांग्रेस की प्रांतीय समिति ने उनसे इस कार्य को त्वरित गति एवं तत्परता से पूरा करने का अनुरोध किया। वे तन-मन से जुट गए। धन तो उनके पास कभी नहीं था। तभी तो उनकी मृत्यु के बाद उनके एक अभिन्न मित्र ने 'दैनिक काल' में लिखा था कि जीवन में धन की कमी को उन्होंने अपने मन और हृदय की विशालता से पूरा किया था। वे 'संकल्प' का ग्राहक बनाने उन स्थानों पर गये जहां कांग्रेस नहीं पहुंची थी। वे ग्राहक बनाने के क्रम में राष्ट्रवाद के दूत के नाते लोगों को सम्बोधित करते थे, राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं से संवाद करते थे और फिर एक वैचारिक पक्ष उपजता था।

तत्कालीन मध्य प्रांत कांग्रेस के नेता और बाद में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष डॉ. बी.एस. मुंजे को 24 फरवरी, 1919 को लिखे पत्र में उन्होंने परिस्थिति का जीवंत वर्णन किया था, 'कांग्रेस के नेता अच्छे वक्ता हैं। वे लोगों को अपने भाषण से प्रभावित करते हैं परन्तु यह प्रभाव अगले दो-तीन दिनों में खत्म हो जाता है। वे अपने व्यवसाय में व्यस्त हो जाते हैं और उनके पास सार्वजनिक कार्य के लिए समय नहीं रहता।' इस पत्र में कांग्रेस कार्य-संगठन की त्रुटि छिपी थी जिसकी 1938 में बोस अनुभूति नहीं कर पा रहे थे। मुंजे जी की डायरी में डॉक्टर जी के अनेक पत्रों में उन प्रसंगों की चर्चा है जो सार्वजनिक कार्य में अन्तर्निहित न्यूनताओं को प्रकाशित करते हैं। वे एक पत्र में ब्रह्मपुर की स्थिति का वर्णन करते हैं। वे लिखते हैं, 'कांग्रेस में 11 वकील शामिल एवं सक्रिय हैं परन्तु किसी को भी देश की राजनीति की जानकारी नहीं है।' एक पत्र में वे एक कांग्रेस के मजूमदार वकील का जिक्र करते हुए उनके मनोविज्ञान पर प्रकाश डालते हैं-'वकील साहब चाहते हैं दूसरे लोग सक्रिय काम कर जोखिम उठायें, परन्तु वे स्वयं जोखिमों से बचे रहें।'

डॉक्टर जी ने क्रांतिकारी जीवन के अनुभवों के बाद सार्वजनिक जीवन का यह अनुभव 'संकल्प' के ग्राहक अभियान के दौरान प्राप्त किया जो बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य-संस्कृति विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ। संगठन के निर्माण और विकास काल, दोनों में धन की आवश्यकता और महत्ता को लेकर रही भ्रांति को उन्होंने गलत साबित किया। शंकर राव देव ने बोस को लिखे पत्र में कहा था कि स्वयंसेवी संगठन बनाने के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता है जो कांग्रेस के पास नहीं है। लेकिन यह धारणा संघ निर्माण में ध्वस्त हुई थी, इसकी जानकारी न तब संघ से इतर ताकतों को थी, न अब है। डॉक्टर जी जानते थे कि संगठन की स्वायत्तता, प्रभाव, शुचिता के लिए धन का स्रोत परिभाषित और पारदर्शी हो। तभी तो उन्होंने गुरुदक्षिणा की परम्परा शुरू की। स्वयंसेवकों के समर्पण से संगठन चलता है तो उसके नीति-निर्धारण एवं कठोर कदम उठाने में पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। बाह्य जगत पर निर्भरता संघ का चरित्र न बने, यह संघ की नैतिक ताकत को अक्षुण्ण, उसकी स्वतंत्रता को अबाध बनाये रखता है।

मदन मोहन मालवीय ने 1929 में नागपुर में संघ के स्वयंसेवकों को सम्बोधित किया। वे ऐसी बात कह गये जो भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों के लिए प्रहरी की तरह है। उन्होंने कहा, 'अन्य संस्थाओं के पास बड़े भवन हैं, पर मानव शक्ति नहीं है। जबकि संघ के पास अपार मानव शक्ति है, पर कोई भवन नहीं है।' ऐसा नहीं था कि संघ का सहयोग करने के लिए 1928-29 में लोग तत्पर नहीं थे। स्वयं डॉक्टर जी की विश्वसनीयता, लोकप्रियता और संबंध यथेष्ट धन एकत्रित करने के लिए पर्याप्त थे। परन्तु वे प्रतीक्षारत थे। स्वयंसेवकों की टोली बढ़ेगी तो भवन भी बनेगा। और भविष्य में वैसा ही होता रहा। उनके जीवनकाल में नागपुर के संभ्रांत लोगों से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर बिरला, स्वयं मालवीय जी जैसे लोगों ने वित्तीय मदद की पेशकश की। डॉक्टर जी बिना उनसे धन लिए अनुग्रहीत महसूस करते रहे। डॉक्टर हेडगेवार की विशेषता थी कि वे सामान्य तरीके से असामान्य कार्य कर दिखाते थे, जो संघ कार्य का चरित्र बन गया है। उनका स्वयं का जीवन भौतिकता से परे था। 4 मार्च, 1929

को उन्होंने डायरी में जो लिखा था वे शब्द वस्तुतः उन पर भी शत-प्रतिशत लागू होते हैं, 'श्री समर्थ रामदास को अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए था। अपनी कृति का अहंकार स्वयं को न हो जाए इसका ध्यान रखकर उन्होंने सम्पूर्ण जीवन स्वधर्म बांधवों की स्थिति के चिंतन एवं आत्मोन्नति का मार्ग खोजने में ही लगा दिया।'

अपने जीवन और विचार से उन्होंने संघ को धन का दास नहीं बनने दिया। वे प्रगतिगामी सोच के स्पष्टवादी व्यक्ति थे, जिनके व्यक्तित्व में निर्णायकता कूट-कूट कर भरी थी। द्वंद्व उनके जीवन का कभी हिस्सा नहीं बना। राष्ट्र सिर्फ स्वर्णिम इतिहास की व्याख्या और भविष्य की स्वर्णिम कल्पनाओं से सम्पन्न नहीं होता, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सामान्य लोगों के सशक्तिकरण से होता है। वे हमेशा सामान्य समाज के साथ संबंद्ध रहे। इसका एक असाधारण प्रसंग है। 1923-24 में नागपुर में बंद पड़े 'स्वातंत्र्य' अखबार को फिर से खड़ा करने का काम उन पर आया। व्यक्ति की पात्रता परिस्थिति को परिवर्तित करने की कैसी क्षमता रखती है उसका यह अनुपम उदाहरण है। उनका नाम जुड़ते ही 'स्वातंत्र्य' की प्रसार संख्या 1200 हो गयी। पहले से प्रकाशित हो रहे अखबारों यथा 'महाराष्ट्र', 'प्राणवीर' आदि की प्रसार संख्या प्रभावित हुई। राष्ट्रीय अभिलेखागार में समाचार पत्रों पर भेजी गयी मध्य प्रांत की रिपोर्ट में बताया गया कि 'स्वातंत्र्य' के निकलते ही 'महाराष्ट्र' की प्रसार संख्या छह हजार से पांच हजार हो गयी थी। अखबार ने डॉ. हेडगेवार के दृढ़ व्यक्तित्व को उजागर करने का काम किया।

राष्ट्रहित एवं जनहित के सामने वे किसी से कभी भी स्वतःस्फूर्त टकराने के लिए तैयार रहते थे। संबंधों का लेखा-जोखा तब अप्रासंगिक हो जाता था। ऐसा ही प्रसंग फरवरी, 1924 का था जब डॉ. मुंजे ने विधान परिषद में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के स्वागत का प्रस्ताव रखा था। तब डॉ. हेडगेवार ने 22 फरवरी, 1924 के सम्पादकीय में इसकी कटु आलोचना की थी। यह अखबार वर्ष पूरा होने से पहले क्यों बंद हो गया? इस प्रश्न के उत्तर में एक विचार छिपा है। नागपुर में एक इम्प्रेस मिल थी। यह एक बड़े घराने की मिल थी। अखबारों एवं सामाजिक संगठनों को इससे विज्ञापन एवं वित्तीय सहायता मिलती थी। इस मिल में मजदूरों ने बोनस एवं मजदूरी के प्रश्न पर आंदोलन किया। विज्ञापन पाने वाले अखबारों ने या तो मालिक का साथ दिया या उदासीन रहे। विज्ञापन तो 'स्वातंत्र्य' को भी मिलते थे। पर डॉ. हेडगेवार ने मजदूरों के हितों को अखबार में मुखर कर दिया। परिणाम बताने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने मजदूर नेता आर. एस. रुइकर की इम्प्रेस मिल के मजदूरों को संगठित करने के प्रयास और लेबर यूनियन बनाने के लिए उनको शुभकामनाएं दीं। यह वही वैचारिक बीज था जब संघ ने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना को सहज, स्वाभाविक प्रक्रिया में लिया। दत्तोपंत ठेंगड़ी इसके रचनाकार बने। यह उसी आर्थिक विचार का परिणाम है। तब भी 'समाजवाद' और 'पूंजीवाद' के नारे खूब चलते थे। एक बार डॉक्टर जी का रुइकर से संवाद हुआ जिसमें उन्होंने कहा था-'आप ध नी सर्वहारा हैं, मैं गरीब पूंजीपति हूं।'

संघ स्थापना के एक दशक बाद उन्होंने 8 मार्च, 1935 को बैरिस्टर अग्रवाल को लिखे पत्र में कहा था, 'अब तक कभी भी किसी कार्य के लिए हमने किसी से धनराशि की याचना नहीं की है।' दो वर्ष के बाद उन्होंने लिमये जी को 30 अक्तूबर को लिखे पत्र में उन मनगढ़ंत आरोपों का जिक्र किया जो बनारस में सोशलिस्टों ने एक पत्रक निकालकर संघ पर लगाए थे, संघ धनवान एवं रियासतदारों के रक्षण के लिए स्थापित हुआ है और सर्वोपरि उन्हीं के आर्थिक सहयोग से उसका पोषण होता है। उन्होंने एवं संघ ने ऐसे काल्पनिक और शत्रुतापूर्ण भाव से लगाये गये आरोपों की चिंता नहीं की, क्योंकि कल्पना करना तो वैचारिक विरोधियों की अपनी सृजनशीलता है और अपने यथार्थ को संतुष्ट रखना हमारी चुनौती है।

जैसे-जैसे संघ का विस्तार होता गया, कुछ धारणाएं टूटती गयीं और कुछ नयी बनती गयीं। महाराष्ट्र में व्यायामशाला की संस्कृति थी। इसके तहत अनेक आधुनिक एवं परम्परागत व्यायामशालाएं चल रही थीं। हनुमान व्यायामशाला, प्रताप व्यायामशाला इत्यादि। इनके गणवेश भी होते थे और वार्षिक उत्सव भी, जिसमें व्यायाम परेड आदि का प्रदर्शन होता था। आरंभिक वर्षों में नागपुर के कुलीनों, नेताओं एवं सरकार, तीनों को लगा कि यह व्यायामशाला संस्कृति का ही एक उपक्रम है। लेकिन दो-तीन वर्ष के अंदर ही इस धारणा का अंत हो गया। संघ का साम्राज्यवाद विरोधी रुख और चरित्र प्रभाव दिखाने लगा। 1930 में साम्राज्यवादी खुफिया विभाग ने पहली बार संघ के बारे में चेताते हुए लिखा कि 'इसमें (साम्राज्यवाद के विरुद्ध) आतंकवादी संगठन बनने की

अपरिमित क्षमता है।' दो वर्ष बाद ही संघ सविनय अवज्ञा आंदोलन का हिस्सा बन गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के बारे में रिपोर्ट लिखते समय खुफिया विभाग ने लिखा, 'आंदोलन धीमा हो गया था, उत्साह प्राय: समाप्त हो गया था परन्तु डॉ. हेडगेवार के आंदोलन में प्रवेश करते ही आंदोलन में जान आ गयी, उत्साह का संचार हो गया। जब वे जंगल सत्याग्रह के लिए जा रहे थे तब दस हजार स्त्री-पुरुष उनके पीछे चल रहे थे।' तब डॉक्टर जी को गिरफ्तार कर सश्रम कारावास की सजा दी गयी थी। यह उनकी तीसरी गिरफ्तारी थी। इससे पूर्व वे दो बार जेल जा चुके थे। साम्राज्यवाद के विरुद्ध उनकी चेतना कांग्रेस आंदोलन या किताबों को पढ़कर जागृत नहीं हुई थी, अपितु स्वत:स्फूर्त थी जो एक ऐसा विषय है जिस पर कोई मनोवैज्ञानिक ही प्रकाश डाल सकता है। छोटी उम्र की अनेक घटनाएं हैं जो सामान्य बालकों में नहीं पायी जाती हैं। इसी में महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में चाटुकारों, साम्राज्यपरस्त लोगों एवं सुविधाभोगी कुलीनों द्वारा जब 22 जून, 1897 को नागपुर में उत्सव मनाया जा रहा था, स्कूलों में मिठाइयां बांटी जा रही थीं तब मात्र 7 वर्षीय इस बालक ने मिठाई फेंकते हुए कहा था, 'वह हमारी रानी नहीं हैं।'

यह घटना अनायास साधारण घटना बन जाती अगर यह बालक अपने व्यक्तित्व में उसी दृढ़ता, जिसके पीछे भावना, विवेक, मूल्य और संकल्प छिपा था, का प्रतिबिम्ब नहीं बन जाता। 1907 में नागपुर के प्रतिष्ठित स्कूल नील सिटी स्कूल में वंदेमातरम् के जयघोष की प्रेरणा और नेतृत्व उन्हीं का था। पारिवारिक पृष्ठभूमि में आर्थिक बदहाली थी, मां-पिता का स्वर्गवास हो चुका था। नागपुर में ब्रिटिश भक्तों का दबदबा था और राजनीतिक संस्कृति में अभी साम्राज्यवाद-विरोधी तेवर सिर्फ चिंगारी के रूप में ही थे। उन परिस्थितियों में उन्होंने चिंगारी को आग बनाने का काम किया। स्कूल से शुरू हुआ वंदेमातरम् का जयघोष नागपुर के कॉलेजों में पहुंच गया। स्कूल इंस्पेक्टर के सामने वंदेमातरम् के नारे के साथ सांकेतिक प्रतिकार नागपुर की राजनीतिक संस्कृति को बदलने की शुरुआत बन गया। समझौते-सुलह की प्रक्रिया में बड़े-बूढ़े, नामी-ग्रामी, प्रभावी लोग शामिल हुए और बच्चे मान गए। बालक हेडगेवार अपनी बात पर अड़े रहे। परिणामस्वरूप स्कूल से निकाल दिए गए। उनके स्कूली मित्र गोविन्द गणेश अवादे ने 'डॉ. हेडगेवार यांचे क्रांति अठावनी' लेख 'महाराष्ट्र' अखबार में 28 जुलाई, 1940 को लिखा। अपने संस्मरण में उन्होंने लिखा कि डॉ. हेडगेवार का मानना था कि अगर वंदेमातरम् के जयघोष, जो मात्र मातृभूमि की वंदना है, को औपनिवेशिक सरकार अपराध मानती है तो मैं इसकी पुनरावृत्ति करता रहूंगा और सभी प्रकार की सजा पाने के लिए तैयार रहूंगा।

राष्ट्रवादियों ने केशव में भविष्य देखना शुरू किया। मैट्रिक की परीक्षा पास करने से पूर्व उन्हें दो बार स्कूल बदलना पड़ा। नागपुर से वे यवतमाल के नेशनल स्कूल में गये। बाबासाहब परांजपे ने इसे स्थापित किया था। एम. एस. अणे ने उन्हें संरक्षण दिया। उस शहर में 'हरिकिशोर' नामक एक पत्र निकलता था। उसके सम्पादक केशव के छात्रावास के सुपरिटेन्डेंट थे। इस पत्र ने मध्य प्रांत के तत्कालीन इंस्पेक्टर जनरल क्लीवलैंड की तुलना हिरण्यकश्यपु से कर याद दिलायी कि इस राक्षस का वध एक छोटे बालक प्रहलाद ने किया था। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 1908 में इसकी प्रसार संख्या 725 थी जो छोटे शहर के लिए बड़ी बात थी। इसी दौर में केशव को आक्रामक भाषण देने और बम फेंकने के आरोप में भंडारा के रामपायली में पहली बार गिरफ्तार होना पड़ा। क्लीवलैंड का यवतमाल में आना हुआ और उसके पूर्व 2 अगस्त, 1909 को स्कूल को सरकार ने अवैधानिक घोषित कर बंद कर दिया। केशव का अगला पड़ाव समर्थ विद्यालय, तेलगांव था। लेकिन कुछ ही दिनों में इस विद्यालय पर भी ताला लगा दिया गया। तब वे मैट्रिक की परीक्षा के लिए नेशनल स्कूल, अमरावती पहुंचे। इस स्कूल से परीक्षा तो उन्होंने दे दी पर अगस्त, 1910 में उस स्कूल पर ताला लगा दिया गया। इस विद्यालय के बारे में सरकार के गृह-राजनीतिक विभाग की रिपोर्ट में 7वीं कक्षा के एक प्रश्न का जिक्र किया गया था। इसमें अंग्रेजी शासन के दुष्प्रभावों पर एक पैरा लिखना था। इसमें यह भी जोड़ दिया गया था कि एक मुक्त पक्षी और सोने के पिंजरे में बंद तोते के बीच क्या अंतर है?

डॉक्टर साहब की साम्राज्यवाद विरोधी छवि उनकी अंतिम सांस तक बनी रही। तभी तो संघ 40 के दशक में क्रांतिकारियों एवं कांग्रेस दोनों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया था। ऐसी अनगिनत घटनाएं हैं जब वे साम्राज्यवाद के प्रश्न पर अपने-पराये के बीच भेद

नहीं करते थे। मुंजे जी से उनका आत्मीय संबंध था। उनके मन में उनके प्रति आदर भाव था। वे उन्हें 'तीर्थस्वरूप मुंजे जी' कहकर पत्र लिखते थे। पर मातृभूमि के प्रति आत्मीयता के सामने वह फीका पड़ जाता था। इसका उदाहरण 1917 में मिलता है। प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के मायावादी रुख से बड़े-बड़े राष्ट्रवादी भी उसके झांसे में आ गये और युद्ध में उसकी सहायता करने लगे। मध्य प्रांत की प्रांतीय भर्ती समिति का कार्य लोगों को सेना में सेवा देने के लिए प्रेरित करना था। जी. एस. खापर्डे इसके अध्यक्ष थे और डॉ. मुंजे उपाध्यक्ष थे। मुंजे ने ब्रिटिश सरकार को लिखे पत्र में कहा था, 'हमारा प्रांत सबसे अधिक भर्ती क्यों नहीं कर सकता है?' डॉ. हेडगेवार ने इस दृष्टिकोण का विरोध किया। तिलक के अनुयायियों की संस्था 'राष्ट्रीय मंडल', जो इस कार्य में लगी थी, में उन्होंने विभाजन कराया एवं युद्ध के दौरान साम्राज्यवाद विरोधी गतिविधियों के लिए उन्होंने नागपुर नेशनल यूनियन की स्थापना की। उनका नारा था- 'क्रांति न कि सहयोग।' लेकिन उनका चिंतन साम्राज्यवाद मुक्त भारत तक नहीं रुका था। उनके मन में प्रश्न था कि कल भारतवर्ष का जो अभिप्राय था वह समकालीन भारतवर्ष का अभिप्राय क्यों नहीं है? क्यों हम भू-भाग और भाई खोते गये और सिमटते गए? यह प्रश्न सभ्यतामूलक था। इसमें भू-भाग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण एक सभ्यता का पराभव था। विरासत के गौरव और वर्तमान की दीनता/हीनता को उन्होंने भविष्य के भारत के नव-निर्माण के संकल्प के साथ विचार प्रवाह में विलीन कर दिया। इसी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीजारोपण हुआ। विचार का वटवृक्ष एक सूक्ष्म बीज में डालकर उन्होंने भारत की आत्मा को झकझोरने का काम किया। इस कार्य की चौहद्दी अपरिभाषित है।

हम डॉ. हेडगेवार की इस रचना के बारे में वर्तमान की परिस्थितियों से प्रभावित होकर सोच सकते हैं। इसलिए उनके समकालीन लोगों की राय महत्वपूर्ण हो जाती है। श्री शाम ने 'केसरी' अखबार में 5 जुलाई, 1940 को जो लिखा वह ध्यान देने योग्य है, 'डॉ. हेडगेवार ने सभी आंदोलनों का करीब से परीक्षण/अवलोकन किया, जिसमें आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि आंदोलन भी था। परन्तु वे उन सबसे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलाव के अनेक आयामों पर चिंतन-मनन किया। जब प्राय: सभी हिन्दू संगठनकर्त्ता राजनीति में हिन्दू आधिपत्य और मुस्लिम अलगाववाद की दृष्टि से सोच रहे थे तब डॉ. हेडगेवार बुनियादी प्रश्न से जूझ रहे थे-हिन्दू समाज को कैसे फिर से ऊर्जावान बनाएं? कौन इस महती कार्य को करेगा? कब इसकी शुरुआत होगी? अंतत: वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि एक मजबूत संगठन ही इन सभ्यताई प्रश्नों का समाधान कर हिन्दू समाज को विनाश से बचा पाएगा।' डॉ. हेडगेवार का विचार सभ्यताई आयाम पर खड़ा था, यह उन समकालीन चिंतकों को समझ में आ चुका था जो तात्कालिकता से ग्रसित होकर संघ को नहीं देख रहे थे।

संघ के द्वारा उन्होंने तीन क्रांतियों की समानान्तर धाराओं का प्रवाह किया है। पहली मानसिक क्रांति, जो प्रत्येक हिन्दू को बड़े क्षितिज पर और व्यापक दृष्टि से सक्रिय करती है। दूसरी, सामाजिक क्रांति जो समाज के भीतर संरचनात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन का प्रवाह है। इसी सामाजिक शक्ति का स्वरूप लोकशक्ति के रूप में होता है जो राज्य शक्ति पर एक नैतिक अंकुश बनती है। और तीसरी, सांस्कृतिक क्रांति, जो हिन्दू राष्ट्र को उस प्राचीन, प्रगतिशील एवं गतिमान सभ्यता का वाहक बना देती है जो कभी राष्ट्र का वाहक हुआ करती थी। आज राष्ट्र की नैतिक, सांस्कृतिक जिम्मेदारी है कि सभ्यताई चेतना को वैश्विक मंच पर प्रभावी रूप में उसी तरह पुनर्स्थापित करे जैसे सदियों पहले हम होते थे। डॉ. हेडगेवार की मृत्यु के बाद 'मराठा' ने सम्पादकीय में जो लिखा वह आज के विमर्शकर्त्ताओं को यथार्थ के दर्शन कराने जैसा है, 'हवा बहती है और घास बढ़ती है। जहां दूसरे अनेक संगठन हवा की तरह बह गये, डॉ. हेडगेवार का संगठन घास की तरह बढ़ता गया। इसकी जड़ें जमीन में हैं। जहां आलोचक और संशयवादी हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा सही है या गलत, वैज्ञानिक है या नहीं, इस पर विमर्श करते रहे, वहीं दूसरी तरफ पूरे देश में एक लाख समर्पित और अनुशासित स्वयंसेवक तैयार हो गये, जो हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा से जुड़े हैं।'

राष्ट्रीयता से सभ्यताई उत्थान का यह वैचारिक आंदोलन राष्ट्र के स्व को पुष्पित, पल्लवित और पुष्ट करने का यज्ञ है जिसमें, 'संघ आगे क्या करेगा?' यह प्रश्न निरर्थक है। अपने अंतिम भाषण में डॉक्टर जी ने यही कहा था, जो सूत्र भी है, गत्यात्मकता का आधार भी और परम वैभव तक पहुंचने का मंत्र भी। ❐

*(साभार : पांचजन्य)*

# जय जयति विक्रमादित्य

■ डॉ. केदारनाथ प्रभाकर

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व जब बौद्धों के प्रभुत्व के फलस्वरूप भारत के क्षत्रिय गृहस्थ छोड़कर विहारवासी होने लगे तब क्षात्रवृत्ति करने वाले वीरों से यह देश खाली होना शुरू हो गया। अंततः उन्होंने काषाय वस्त्र धारण कर अपनी तलवार घर के कोनों में टिका दी। उसका परिणाम यह निकला कि भारत का पश्चिमोत्तर भू-भाग विदेशी आक्रमणों द्वारा निरन्तर आक्रांत रहने लगा। आगे चलकर इस समूचे क्षेत्र पर ही पहले पारसियों, फिर ग्रीकों और उसके बाद शकों ने अपना अधिकार जमा लिया। बात यहीं समाप्त नहीं होती। बलख से आये ग्रीक तो तक्षशिला से पाटलीपुत्र तक जा पहुंचे। इसी प्रकार शक भी सुदूर दक्षिण तक फैल गये। उन्होंने मथुरा, अवन्ती, गुजरात, सौराष्ट्र, सिंधु और महाराष्ट्र के समूचे क्षेत्र में अपने क्षत्रप (सत्रप) बिठा दिये।

**ग्रीकों का सफाया**

भारत की इस दुर्दशा को देखकर ब्राह्मणों से रहा नहीं गया। उन्होंने अपनी शक्ति को एकत्रित किया और राजन्यों के घर के कोनों में टिकाई तलवार उठा ली। यह उसी क्रांति का ही नतीजा था कि स्रुवा फेंक अस्त्रहस्त हुए शुंग, चेदि और सातवाहन आदि ब्राह्मणों ने क्रमशः मगध, कलिंग और दक्षिण से ग्रीकों को मार भगाया।

**शकों का उन्मूलन**

ब्राह्मणों को देखकर क्षत्रियों का खून भी खौलने लगा और उन्होंने तपस्वियों का बाना उतार अपनी तलवारें सम्भाल लीं। उन क्षत्रियों में विक्रमादित्य के नेतृत्व में मालवों के गणों ने शकों को धूल चटाई और पश्चिमोत्तर भारत को उनके चुंगल से मुक्त कराया। यह घटना ईस्वी सन् के शुरू होने से 57 वर्ष पूर्व की है।

**विक्रम संवत्**

मालवों ने इस राष्ट्रीय विजय के उपलक्ष्य में न केवल नये सिक्के

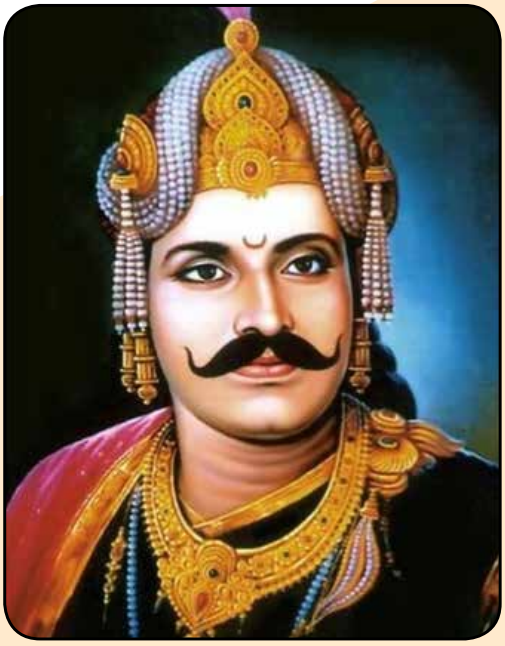

(मालवानांजय) ही चलाये बल्कि एक नया संवत्, जो पहले 'कृत', 'मालव' नाम से और बाद में 'विक्रम' नाम से प्रसिद्ध हुआ, भी चलाया। इस अवसर पर उन्होंने अवन्ती देश का नया संस्कार (मालवा-देश) भी किया।

**विक्रमादित्य**

मालवों ने विक्रमादित्य को अपना सम्राट घोषित किया और उसे 'शकारि' यानि शकों का शत्रु कहकर सम्मानित किया। इस प्रकार भारत से शकों का सफाया हुआ। इस घटना के बाद 'विक्रमादित्य' नाम तो भारत से विदेशी सत्ता को खदेड़ने का प्रतीक ही बन गया। इस शृंखला में सम्राट हेमचन्द्र भारत के अंतिम 'विक्रमादित्य' हुए जिन्होंने मुगल सत्ता को 29 दिन तक दिल्ली से खदेड़े रखा।

विक्रम संवत् का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से (नर्मदा के दक्षिण में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से) होता है। पूर्वोत्तर भारत में मेषार्क (वैशाखी) पर नया संवत् शुरू होने की परम्परा भी रही है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर आदि में आज भी वैशाखी पर ही नया संवत् शुरू होता है। चाहे कुछ भी हो युधिष्ठिर संवत् के बाद भारत में सबसे लम्बा जीवन-विस्तार यदि किसी संवत् को मिला तो वह विक्रम संवत् ही है।

**मिहिरावली**

भारतीय विज्ञानमूर्ति आचार्य वराहमिहिर सम्राट विक्रमादित्य के नवरत्नों में प्रमुख थे। उन्होंने ही कालगणना के लिए दिल्ली में एक विशाल वेधशाला (मिहिरावली) का निर्माण करवाया। मिहिरावली (आधुनिक मेहरौली) तो अब खण्डहरों में बदल चुकी है किन्तु उसका गगनचुम्बी मेरुस्तम्भ, जिसे अब कुतुबमीनार कहते हैं, आज भी सम्राट विक्रमादित्य की कीर्ति गा रहा है। ❐

# इतिहास के परिप्रेक्ष्य में नव संवत्सर

■ एफ.सी. भाटिया

सम+वसति+ऋतव: अर्थात् जिसमें अच्छी ऋतु हो, उस काल की गणना के प्रमाण को संवत्सर कहते हैं। आदि ग्रंथ ऋग्वेद की एक ऋचा में संवत्सर की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि संवत्सर एक चक्र है। 12 भागों में विभक्त 360 अंशों के इस चक्र में सर्दी, गर्मी, वर्षा रूपी तीन नाभियाँ हैं। इस प्रकार हमारे देश में कालगणना के लिए अनेक संवत् (सन्) प्रचलित हैं, जिनमें सप्तर्षि संवत्, युगादि संवत्, कलि संवत्, बुद्ध-महावीर निर्वाण संवत्, शक संवत् और विक्रम संवत् प्रमुख हैं। संवत्सरों की कुल संख्या साठ है, जिनके समूह को एक मंडल कहा जाता है। ये साठ संवत् क्रमश: अपनी आवृत्ति करते रहते हैं। इस प्रकार हमारा यह संवत्सर संसार के सभी संवत्सरों की अपेक्षा वैज्ञानिक, प्राकृतिक तथा पूर्ण है। हमारा संवत्सर पहले से ही जान लेता है कि किस तिथि को सूर्य ग्रहण होगा, कुम्भ स्नान होगा, चन्द्रग्रहण लगेगा।

पुराणों की मान्यता के अनुसार ब्रह्मा जी ने शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सृष्टि की रचना का कार्य आरम्भ किया। ब्रह्मा जी ने अपनी सभा में देवताओं को बुलाकर उन्हें सृष्टि की रचना में प्रवृत कर दिया। इसीलिए भारतीय कालगणना में इस दिन से नव वर्ष नव संवत्सर के प्रारम्भ की मान्यता है। इस पावन तिथि में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी की सविधि पूजा करने के उपरांत उनसे नव वर्ष के शुभ होने की प्रार्थना की जाती है-''हे भगवान! आपके प्रसाद से मेरे वर्ष भर के विघ्न नष्ट हो जाएँ और यह नववर्ष मेरे लिए कल्याणकारक तथा शुभ हो।''

भगवान् विष्णु के सर्वप्रथम अवतार मत्स्य का आविर्भाव इसी पावन तिथि में हुआ था। स्मृति-कौस्तुभ कहती है- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र एवं सूर्य विष्कुंभ योग से दिन के समय श्रीहरि ने मत्स्य में अवतार लिया। इस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मत्स्यावतार की जयंती तिथि भी सिद्ध होती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्व भी है। कहा जाता है कि इसी दिन सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी। उसने अपनी कीर्ति को चिरस्थायी बनाने के लिए इसी तिथि से अपने विक्रम संवत् का प्रारम्भ मानते हुए संवत्सर की इस गणना का श्रीगणेश किया। विक्रम संवत् स्वच्छ शासन प्रणाली पर आधारित था। उनके शासन में संस्कृत भाषा राष्ट्रभाषा बनी जिसके कारण प्रजा में वेद उपनिषद् आदि साहित्य का प्रचार उच्च कोटि पर था। उनका शासन स्वर्ण युग का प्रतीक है।

इसी पावन तिथि पर भगवान राम के राज्याभिषेक और महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना हुई। गुरु अंगद देव जी का प्रकाश उत्सव, सिंध के महान् संत झूलेलाल जी का जन्म आज के दिन ही हुआ। सिंध प्रान्त में इस नवसंवतसर को 'चेटी चंड चैत्र का चांद' नाम से पुकारा जाता है। कश्मीर में यह पर्व नौरोज के नाम से मनाया जाता है। अर्थात् नया शुभ प्रभात जिसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार नव संवत्सर पर कलश स्थापित कर नौ दिन का व्रत रखकर माँ दुर्गा की पूजा प्रारम्भ कर नवमी के दिन हवन कर माँ भगवती से सुख शांति तथा कल्याण की प्रार्थना की जाती है। मानव शरीर को निरोगता प्रदान करने वाली इस परम ऊर्जामयी तिथि को इसी कारण आरोग्य प्रतिपदा भी कहा जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन कड़वी नीम की कोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर खाना चाहिए।

इस तिथि पर माँ सरस्वती अपनी महातूलिका द्वारा प्रकृति में विविध रंग भर कर मानव की झोली में डाल देती हैं। माँ सुंदर, आकर्षक, अनूठे रंगों से प्रकृति के दामन को भर देती हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी इसी पावन तिथि पर हुआ। इस तिथि को शत् शत् नमन करता हूं। ❐

# विज्ञान सम्मत है भारतीय नववर्ष

■ अरुणिमा देव

इस समय विश्व में 70 से अधिक कालगणनाएँ प्रचलित हैं। उनसे संबंधित देशों में उनके नववर्ष अपने-अपने हिसाब-किताब के अनुसार आते हैं और अपने-अपने देश की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार मनाये जाते हैं। परन्तु इन सभी कालगणनाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इनका आधार सारे ब्रह्माण्ड को व्याप्त करने वाला कालतत्व न होकर व्यक्ति विशेष, घटना विशेष, वर्ग विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश विशेष है। इसी कारण इन कालगणनाओं से संबंधित देशों की संस्कृतियां भी आदि हैं।

**भारतीय संस्कृति**

विश्व में केवल भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति है जो अनादि है क्योंकि उसका मूल वेद है। वेदों में दिये सिद्धांत शाश्वत सत्य और नित्य हैं। प्राचीनतम होने पर भी वे सदैव नवीन हैं। उनमें आज तक कोई भूल निकाली नहीं जा सकी है। यदि कभी विज्ञान से मतभेद हो गया तो भी वैज्ञानिकों को घूम फिर कर पुन: वेदों की ही शरण में आना पड़ा है। वेदों के सिद्धांत अपरिवर्तनीय हैं और इसी कारण ये परिस्थिति निरपेक्ष हैं।

**वर्ष प्रतिपदा का इतिहास**

वर्तमान मानव सृष्टि के बारे में विद्वानों में बहुत मतभेद हैं। पश्चिम के खगोलशास्त्री, दार्शनिक, विचारक और उनके धर्मग्रंथ इसे 6-7 हजार वर्ष पुरानी मानते हैं। परंतु भूगर्भीय क्षेत्र में निरंतर हो रहे अनुसंधानों के कारण यह बात अब वैज्ञानिक भी स्वीकार करने लगे हैं कि मानवीय सृष्टि की प्राचीनता मानव की कल्पनाशक्ति से परे है। भारतीय कालतत्व विशेषज्ञ मनीषियों या वेदों में दिये विवरणानुसार यह मानवीय सृष्टि लगभग 2 अरब वर्ष पुरानी है। भूगर्भीय क्षेत्र में निरन्तर पाश्चात्य वैज्ञानिकों के जो अनुसंधान हो रहे हैं उनमें प्राप्त तथ्यों के अनुसार मानवीय सृष्टि की प्राचीनता 6-7 हजार वर्ष के बजाए 20 हजार वर्ष के निकट जा पहुंची है। इससे पाश्चात्य विद्वानों की पूर्व अवधारणा कि यह विश्व 6-7 हजार वर्ष पूर्व बना था, धराशायी हो जाती है। अब उसमें परिवर्तन अनिवार्य हो गया है। अब हमें जिस पृथ्वी ग्रह पर हम रहते हैं इसके बारे में भी विचार करना विषय के प्रतिपादन के लिए लाभदायक होगा।

विश्व के प्राय: सभी भूगर्भशास्त्री यह मानते हैं कि इस पृथ्वी का पहले अपना कोई अस्तित्व नहीं था। यह सूर्य का हिस्सा, उसका अभिन्न अंग थी। प्राकृतिक और दैवी कारणों से यह हिस्सा सूर्य से पृथक हो गया आज से 4,13,29,49,111 वर्ष पूर्व। यही इस पृथ्वी की जन्मतिथि है। उस समय यह पृथ्वी पूर्णत: जलमग्न थी और इसका तापमान 2000 डिग्री था। इसको ठंडा होने में लाखों वर्ष लगे और जब इसका तापमान 200 डिग्री तक पहुंच गया तब इसमें प्राकृतिक-दैवी कारणों से भूनिर्माण शुरू हुआ। कालक्रम में जो इसमें से प्रथम हिस्सा बाहर आया उसका नाम सुमेरू पर्वत है। इसी सुमेरू पर्वत के एक पवित्र भूखंड पर आज से 1,97,29,49,124 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार के दिन प्रात: 9 बजे प्रथम मानव का प्रादुर्भाव इस अद्भुत विश्व के महाविकल्पक, सृष्टि निर्माता ब्रह्मा के रूप में हुआ। इसी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नववर्ष, नवमास और नवदिन एक साथ शुरू हुए।

**वैदिक संवत्**

वैदिक संवत् इस वर्ष 1,95,48,85,112 वां होगा क्योंकि धरती को अपना रूप संवारने में 1,70,64,000 वर्ष लगे।

**वर्ष प्रतिपदा का महत्व**

भारतीय संस्कृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि इस पृथ्वी पर पहले मानव की उत्पत्ति

इसी दिन हुई। इस कारण यह दिन हम भारतवासियों के ही लिए नहीं, सारी मानव सृष्टि के लिए भी अत्यंत पूजनीय है।

इस शुभ दिन देश भर में अनेक सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन होता है। शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए अभिनंदन पत्र अपने संबंधियों और इष्ट मित्रों को भेजे जाते हैं। नये वर्ष की नई दैनंदिनी खरीदी जाती है।

देश के हर नगर और हर गांव, परिवार में नये वर्ष का फल सुनने के लिए पारिवारिक कार्यक्रमों में कुल के पुरोहित आते हैं। परिवार के सारे सदस्य एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं और पुरोहित नये पंचांग से नये वर्ष के फल के बारे में बताता है। बाद में प्रसाद और मिठाइयां बांटी जाती हैं। इस शुभ दिन के उपलक्ष्य में नयी वस्तुएं खरीदने का भी रिवाज है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ कुछ ऐसी विशेष घटनाएं संबंधित हैं जिनके कारण इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यथा प्रभु रामचन्द्र का राज्याभिषेक, धर्मराज युधिष्ठिर का राजतिलक, विक्रमादित्य के विक्रम संवत् का शुभारंभ, सम्राट शालिवाहन का शक संवत्, स्वामी दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना, प्रखर देशभक्त संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन।

**ईसाई संवत् का इतिहास**

ईसवी सन् का प्रारंभ ईसा की मृत्यु पर आधारित है। परंतु उनका जन्म और मृत्यु अभी भी अज्ञात है। ईसवी सन् का मूल रोमन संवत् है। यह 753 ईसा पूर्व रोमन साम्राज्य के समय शुरू किया हुआ था। उस समय उस संवत् में 304 दिन और 10 मास होते थे। उस समय जनवरी और फरवरी के मास नहीं थे। ईसा पूर्व 56 वर्ष में रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने वर्ष 455 दिन का माना। बाद में इसे 365 दिन का कर दिया। उसने महीनों के बाद दिन संख्या भी तय कर दी। इस प्रकार ईसवी सन् में 365 दिन और 12 मास होने लगे। फिर भी इसमें अंतर बढ़ता गया। क्योंकि पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने के लिए 365 दिन 6 घंटे, 9 मिनट और 11 सेकंड लगते हैं। ईसवी सन् 1583 में इसमें 18 दिन का अंतर आ गया। तब ईसाइयों के धर्मगुरु पोप ग्रेगरी ने 4 अक्टूबर को 15 अक्टूबर बना दिया और आगे के लिए आदेश दिया कि 4 की संख्या से विभाजित वाले होने वर्ष में फरवरी मास 29 दिन का होगा। 400 वर्ष बाद इसमें 1 दिन और जोड़कर इसे 30 दिन का बना दिया जाएगा। इसी को ग्रेगरियन कैलेंडर कहा जाता है जिसे सारे ईसाई जगत ने स्वीकार कर लिया।

ईसाई संवत् के बारे में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पहले इसका आरंभ 25 मार्च से होता था परन्तु 18वीं शताब्दी से इसका आरंभ 1 जनवरी से होने लगा। इस कैलेंडर में जनवरी से जून तक के नाम रोमन देवी देवताओं के नाम पर हैं। जुलाई, अगस्त का संबंध सम्राट जूलियस सीजर और उसके पोते अगस्टस से है। सितम्बर से दिसंबर तक के मासों के नाम रोमन संवत् के मासों की संख्या के आधार पर है। जिसका क्रमशः अर्थ है 7,8,9 और 10 है। इससे ईसवी सन् के खोखलेपन की पोल और ईसाई जगत की अवैज्ञानिकता जग जाहिर हो जाती है।

**भारत में मासों का नामकरण**

इसके विपरीत भारत में मासों का नामकरण प्रकृति पर आधारित है। यथा-चित्रा नक्षत्र वाली पूर्णिमा के मास का नाम चैत्र है, विशाखा का वैशाख है, ज्येष्ठा का ज्येष्ठ है, श्रवण का श्रावण, उत्तराभाद्रपद का भाद्रपद, अश्विनी का आश्विन, कृतिका का कार्तिक, मृगशिरा का मार्गशीर्ष, पुष्य का पौष, मघा का माघ और उत्तरा फाल्गुनी का फाल्गुन मास होता है। इसी तरह भारत में 354 दिन के चान्द्र वर्ष और 365 दिन 6 घंटे, 9 मिनट 11 सेकेंड के अंतर को दूर करने के लिए हमारे ज्योतिषियों ने 2 वर्ष 8 मास 16 दिन के उपरांत एक अधिक मास या पुरुषोत्तम अथवा मल मास की व्यवस्था करके कालगणना की शुद्धता और वैज्ञानिकता बरकरार रखी है।

उपरोक्त तथ्यों के संदर्भ में यही उचित होगा कि हम सभी भारतवासी पूर्णतः वैज्ञानिकता पर आधारित अपनी युगों की वैज्ञानिक एवं वैश्विक भारतीय कालगणना का प्रयोग करें। इस कालगणना का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा श्री ब्रह्माजी का सृष्टि रचना का दिन होने के कारण यह वर्ष प्रतिपदा केवल हम भारतवंशियों के ही लिए नहीं अपितु संपूर्ण सृष्टि के लिए भी पूजनीय दिन है।

इधर-उधर से जोड़-तोड़, मनगढ़ंत कल्पनाओं, मिथ्या सिद्धांतों और कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा - भानुमति ने कुनबा जोड़ा के नमूने पर बने ईसवी सन् के नववर्ष को ईसाई जगत मनाये, हम इसे क्यों मनायें? यूरोपीय ईसाई साम्राज्य के प्रभाव काल में यह ईसाई कालगणना हम पर थोपी गई थी। उस समय की मानसिक दासता के कारण हम ईसाई वर्ष को मनाते चले आ रहे हैं। यह हमारे लिए लज्जा का विषय है। आइए हम इसका परित्याग कर अपना भारतीय नववर्ष मनाएं। ❐

# सेवा विभूति सम्मेलन

17 मार्च 2023 को उत्तरी विभाग में सेवा विभूति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें अग्रवाल सभा रोहिणी का सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय रमेश अग्रवाल जी अध्यक्ष सेवा भारती दिल्ली रहे। अन्य विशेष अतिथि आदरणीय जसवंत जैन, आदरणीय जीतराम सोलंकी और आदरणीय जितेंद्र कुमार गोयल रहे। कार्यक्रम में सेवा भारती केंद्र के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम में रोहिणी, कंझावाला, नरेला और बुराड़ी जिले से सेवा विभूति सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में सामूहिक कन्या विवाह की 39 बेटियों को पग फेरे के लिए बुलाया गया। सभी अपने जीवनसाथी के साथ इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुई। सभी बेटियों को उपहार भेंट किए गए। सभी सेवा विभूति का सम्मान सेवा भारती की माला द्वारा द्वार पर किया गया और उपहार स्वरूप सभी को रामलला की सुंदर प्रतिमा भेंट स्वरूप प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर बड़े उत्साह के साथ कार्य किया।

# डॉ. अम्बेडकर की नारी दृष्टि : एक विवेचन

■ डॉ. प्रवेश कुमार

डॉ. अम्बेडकर कहते थे, ''किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समाज में महिलाओं की कितनी प्रगति है।''

भारत भूमि जिस भूमि के मौलिक चिंतन के केन्द्र में समाज और उस समाज का कल्याण होना अभीष्ट है, पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर जी ने भी उसी चिंतन की धारा को दुनिया से परिचित कराने का कार्य किया है। मैं अक्सर कहता हूं कि बाबा साहब ने कोई नया कार्य नहीं किया, बल्कि भारत की धूमिल होती हिंदू संस्कृति को पुन: भारत के मानस से अवगत करा उस आधार पर भारत के जनमानस को पुन: संगठित करने का कार्य किया है। इसीलिए जब महिलाओं के अधिकारों की वे बात करते हैं तो कोई विदेशी संदर्भ ना देकर भारत के इतिहास को बताते हैं, उन्हीं वैदिक ग्रंथों को आधार मान अपनी बात कहते हैं। अम्बेडकर ने अपने लेखों के माध्यम से भारत की समाज व्यवस्था का बेहतरीन चित्रण किया, जहां वे वैदिक काल के सामाजिक ढांचे की बात करते हैं, वहीं वे समय के साथ उसमें आयी विसंगतियों को बखूबी चिन्हित भी करते हैं। वे समाज को बताते हैं कि ये समाज बनता कैसे है, समाज तत्व है क्या? हमारी भारत की दृष्टि इसको लेकर क्या है? समाज है क्या? इसे हमारे ग्रंथों आदि ने बखूबी बताया है, अम्बेडकर ने माना कि समाज वो है जहां सभी रहने वाले लोगों में आपसी बंधु भाव होता है। इसी बंधु भाव के आधार पर समाज बनाता है। समाज शब्द संस्कृत के दो शब्दों 'सम' उपसर्ग पूर्वक और 'अज' धातु से मिलकर बना है। सम का अर्थ इकट्ठा व अज का अर्थ उन्नति करना यानि एक साथ होकर उन्नति करना ये समाज है, ये ही उभारतीय दृष्टि भी है इसी की मांग तो अंबेडकर कर रहे थे। गिनसबर्ग ने भी समाज को बड़े अच्छे से समझाया है। संकट में कुछ लोगों का इकट्ठा हो जाना समाज नहीं है, बल्कि उनमें एक-दूसरे के प्रति परस्पर लगाव का भाव हो इसी से समाज बनता है। डॉ. हेडगेवार ने भी कुछ इसी तरह हिन्दू समाज को लेकर अपनी टिप्पणी की हिन्दू समाज के एकत्व भाव की कमी के कारण भारत वर्षो गुलामी, अंधकार की ओर गया।

यह हम सभी जानते हैं कि डॉ. अम्बेडकर ने आजीवन भारत भूमि के लिए काम किया, समाज समरस हो इस ध्येय के लिए ही बाबा साहब ने काम किया। महिलाओं की भारतीय समाज में निम्नतर दर्जे को उन्होंने चिन्हित किया। वहीं वे उनके मुक्तिदाता भी बने। भारतीय परंपरा की धारा में रहते हुए महिला सुधार को लेकर आंदोलन चलाया। कट्टर हिन्दूवादी मानस को उनके ही साक्ष्यों के आधार पर उनकी आलोचना की। इसी कड़ी में हिन्दू कोड बिल, अम्बेडकर द्वारा एक क्रांतिकारी कदम था, जहां यह एक ओर महिलाओं को तमाम अधिकारों से लैस करता था, वहीं सिख, बौध, जैन आदि को हिन्दू समाज का हिस्सा भी मानता है। वहीं देश में एक कानून की अवधारणा को भी स्थापित करता था। हिन्दू कोड बिल पर अपनी बात रखते हुए वे कहते हैं, हिन्दू कोड बिल का सिखों, बौधों और जैनों पर लागू होना एक ऐतिहासिक सत्य है। इस कानून के बन जाने पर हिन्दुओं को भी एक समान सांझा पर्सनल लॉ मिल जाएगा, जो हिन्दुओं को भी संसार के अन्य समाजों की श्रेणी में खड़ा कर देगा। प्रत्येक हिन्दू व्यक्तिगत तथा समष्टीगत रूप से समानता ओर सामाजिक एकता के सूत्र में बंध जाएगा। यह बिल हिन्दू शास्त्रों के अनुकूल है। वे कहते हैं कि जहां तक इस बिल के आधार का सम्बंध है तो यह हिन्दू शास्त्रों के अनुरूप ही है। महिलाओं को संपत्ति का अधिकार दया भाग परम्परा के अनुसार दिया गया है। यह नया बिल इन अधिकारों को पुन: महिलाओं को प्रदान करने की कानूनी व्यवस्था का निर्माण करना चाहता है, जो हिन्दू अपनी पुरानी डगर पर चलते रहना चाहते हैं, यह बिन उनको ऐसा करने से रोकता नहीं है, क्योंकि यह बिल, हिन्दुओं के परम्परागत रीति-रिवाजों को कानूनी रूप देकर उनका आधुनिकीकरण करता है।

वैदिक काल में महिलाओं ने ऋग्वेद की तमाम ऋचाओं का संकलन किया, स्त्रियों का उपनयन संस्कार तक किया जाता था, वहीं ब्रह्मचर्य आश्रम केवल छात्रों के लिए नहीं था अपितु वह छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए था। बाबा साहब ने स्वयं इसे माना कि वैदिक काल में स्त्री-पुरुष असमानता का प्राय:

अभाव है। अथर्ववेद में प्रसंग आता है कि ब्रह्मचर्य काल पूरा करने के उपरांत कन्या विवाह योग्य मानी जायेगी। यह प्रसंग इस बात को प्रमाणित करता है, जिसका वर्णन बाबा साहिब अम्बेडकर करते हैं कि वैदिक समाज में स्त्री-पुरुष भेद नहीं था। वहीं उत्तरवैदिक काल आते-आते समाज में कुछ विसंगतियां जरूर आ गई, जहां शिक्षा से और संन्यास से कुछ हद तक महिलाओं को दूर ही रखा जाने लगा लेकिन महात्मा बुद्ध के द्वारा महिलाओं को भी भिक्षु व्यवस्था में शामिल करना एवं उन्हें शिक्षा के समान अवसर दिलाने का अभूतपूर्व कार्य किया। एक भिक्षुण ी के शब्द हैं यहां इस शिला पर बैठी मैं पूर्ण मुक्ति का अनुभव कर रही हूं। स्वाधीनता का वातावरण मेरी आत्मा शरीर को आच्छादित किए हुए है। इसी प्रकार कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में स्त्रियों के विवाह, पुनर्विवाह एवं उसके भरण-पेषण को लेकर नियमों का उल्लेख किया है। कौटिल्य ने स्त्री को पुनर्विवाह की आज्ञा दे रखी थी, यदि किसी पुरुष से कोई पुत्र संतान नहीं पैदा होती तो ऐसी स्थिति में वह स्त्री 8-10 साल प्रतीक्षा के उपरांत स्वेच्छा से किसी अन्य पुरुष से विवाह कर सकती है। यहीं कौटिल्य ने स्त्री भरण-पोषण हेतु पुरुष की आय का एक हिस्सा स्त्री का होगा, वहीं आभूषणों पर सारा अधिकार महिला का ही होगा। यही नहीं, किसी विवाद, प्रताड़ना की परिस्थिति में महिला को न्यायलय की शरण में जाने की भी छूट थी। अम्बेडकर भारत की तमाम महिलाओं के मुक्तिदाता हैं। अम्बेडकर ने अपने जीवनकाल में तमाम लेखों के माध्यम से महिलाओं की समस्या को पूरजोर तरीके से उठाया, नारी एवं प्रतिक्रांति हिन्दू नारी का उत्थान एवं पतन ऐसे तमाम लेख अम्बेडकर के द्वारा समय-समय पर लिखे गए। हिन्दू कोड बिल की मांग को महिलाएं कैसे भूल सकती हैं, जिसके ना लागू होने के कारण बाबा साहब अपने मंत्री पद तक को छोड़ देते हैं। अम्बेडकर ने नारी शिक्षा पर बहुत ज्यादा जोर दिया इसीलिए 1913 में न्यूयार्क में एक भाषण देते उन्होंने कहा मां-बाप बच्चों को जन्म देते हैं, कर्म नहीं देते। मां-बाप बच्चों के जीवन को उचित मोड़ दे सकते हैं, यह बात अपने मन पर अंकित कर यदि हम लोग अपने लड़कों के साथ अपनी लड़कियों को भी शिक्षित करें। हमारे समाज की उन्नति तीव्र होगी, इसीलिए इस विचार को नजदीकी रिश्तेदार तक जल्दी से पहुंचाना चाहिए।

महिलाओं की शिक्षा पर अम्बेडकर का काफी जोर रहा, इसके साथ ही महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हो, इस पर भी इनका विशेष आग्रह था। 1918 में 'साउथ बोरो समिति' से छोटे-मंझोले प्रकार के काम-धंधों को महिलाओं को खोलने में सहायता करने की अहम मांग अम्बेडकर ने की थी। महिला को प्रसूति अवकाश मिले, इसकी मांग अम्बेडकर ने की और सरकार से उसको मनवाया भी। हिन्दू कोड बिल तो महिलाओं की मुक्ति का अहम दस्तावेज था जिसका संबंध विवाह, तलाक, पिता की सम्पत्ति की वारिस होना, स्वेच्छा से विवाह करना और विच्छेद करना आदि। अम्बेडकर के अनुसार नारी राष्ट्र की निर्माता है, राष्ट्र का हर नागरिक उसकी गोद में पलता है। नारी को जागृत किए बिना राष्ट्र का विश्वास असंभव है। इसीलिए नारी को शिक्षित होकर राष्ट्रीय उन्नति में सहयोग करना चाहिए।

पत्नी कैसी होनी चाहिए, इस बारे में पुरुषों का विचार जाना जाता है, वैसे ही पति कैसा हो इस बारे में पत्नी का मत जान लेना भी जरूरी है। परिवार नियोजन-अनेक बच्चों को जन्म देने से स्त्री रोगग्रस्त हो जाती है। उसकी आयु में कमी आती है, परिवारिक आय और व्यय में बेहतर तालमेल होना चाहिए, बच्चे ज्यादा और आय कम संयुक्त रूप से सम्पूर्ण परिवार के दुख-दर्द का कारण बनता है। इसलिए उन्होंने बच्चे दो ही अच्छे का सुझाव दिया था।

प्रसूति अवकाश- 1928 में प्रसव लाभ विधेयक के समर्थन पर बोलते हुए अम्बेउकर कहते हैं मैं इस बात से सहमत हूं कि इससे शासन पर भारी बोझ पड़ेगा, लेकिन फिर भी मैं वेतन में कटौती का पक्षधर नहीं हूं। ये महिलाओं का अपना अधिकार है, जिसकी प्राप्ति उन्हें होनी ही चाहिए।

इसी को तो 1961 में नीति निर्देशक तत्व में शामिल करते हुए प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम 1961 के तहत लागू किया गया, अब यह प्रसूति अवकाश लगभग 1 वर्ष तक का हो गया है। बाबा साहब ने ना ही सिर्फ नारी के अधिकारों की वकालत की, बल्कि उनको भारत के उस इतिहास से भी परिचित कराया, जहां महिला युद्ध के मैदान में लड़ाई भी लड़ रही है। एक श्रेष्ठ ऋषिका वेद की तमाम ऋचाओं की रचना भी कर रही है। इसलिए भारत का स्त्री विमर्श दुनिया के देशों के प्रकार का नहीं है जहां पुरुष निम्न हो जाए, स्त्री उच्च, बल्कि हमारा चिंतन सब समान हो जाएं पर आधारित है। ❐

*(लेखक तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत केन्द्र, स्कूल आफ इन्टरनेशल स्टडीज, जवाहर लाल नहेरू विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं)*

# इतिहास सिद्ध महापुरुष

■ प्रतिनिधि

छत्रपति शिवाजी महाराज एक महान राजा और रणनीतिकार थे। उनका जन्म 19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी किले में हुआ था। 3 अप्रैल, 1680 को वे इस दुनिया से विदा भी हो गए। यानी वे केवल 50 वर्ष ही जीवित रहे, लेकिन वह कार्य कर गए, जिस पर आज भी हर हिन्दू को अभियान है। शिवाजी महाराज ने लगभग 1000 साल तक विदेशी आक्रमणों और उसके कारण निर्माण हुई दासता में पिसने वाले हिन्दुओं को अपमान, यातना और निराश भरे जीवन से मुक्ति दिलाई। उन्होंने संपूर्ण भारत में व्याप्त विशाल मुगल सत्ता को जड़ से हिला डाला और स्वतंत्रता की पुन: स्थापना की। छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्य दिव्य, विलक्षण और असामान्य कोटि में आते हैं। उनका साहस, पराक्रम, कुटनीतिक दक्षता, रण-चातुर्य, तीक्ष्णबुद्धि और संगठन कुशलता सभी कुछ अद्वि तीय थी। अपनी 50 वर्ष की आयु में इस महापुरुष ने इतिहास की दिशा मोड़ दी, हिन्दुओं में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगा दिया। शिवाजी ने अत्यंत साधारण घराने में उत्पन्न होकर भी स्वतंत्रता के लिए जो कुछ सफल प्रयास किये उसे कारण समाज में आत्मविश्वास जगता रहा है। इसी कारण भारत की आजादी की लड़ाई में सभी देशभक्तों ने उनका आदर्श अपने सामने रखकर प्रेरणा प्राप्त की है।

**तेजस्वी आदर्श जीवन**

यह एक विचारणीय विषय है कि आखिर शिवाजी के इस विलक्षण तेजस्वी आदर्श जीवन की श्रेष्ठता का रहस्या क्या है? उनके जीवन में ऐसा कौन सा पक्ष विशेष महत्व का है जिसका आकर्षण आज भी वैसा ही बना है? छत्रपति शिवाजी राजसिंहासन पर बैठे और उनका राजा के नाते राज्याभिषेक हुआ। क्या यही बात उनकी महत्ता की सूचक है? विचार कराने पर पता चलेगा कि यह बात

इतनी महत्व की नहीं है। शिवाजी केवल राजा ही नही युग पुरुष थे। शिवाजी महाराज के जन्म के समय हिन्दू समाज की भीषण दुर्गति थी। मुगल साम्राज्य का दबदबा था। दक्षिण में वीजापुर की आदिलशाही, निजामशाही, बीदरशाही और कुतुबशाही आदि सल्तनतों का डंका बज रहा था। बड़े-बड़े हिन्दू राजा, सामन्त और योद्धा म्लेच्छ राज लक्ष्मी की चाकरी कर रहे थे। गुलामी की पकड़ भयंकर थी अत्याचार, बर्बरता, बिडम्बना के बीच हिन्दू समाज का जीवन पिस रहा था। घोर निराश छाई हुई थी। दासता और निराशा के कारण स्वाभिमान का कहीं पता ही नहीं चलता था। दीन-हीन और आत्मविश्वास शून्य जीवन में से यही प्रतिध्वनि निकल रही थी, युद्ध में हिन्दुओं की कभी जीत हो नहीं हो सकती। वे कभी स्वातंत्र्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। लोग समझते थे दासता ही हिन्दुओं के भाग्य में लिखी है। कहा जाता था कि पुराणों में लिखा है कि यवन, म्लेच्छों का राज्य होगा। वही अब सच हुआ है। दिल्लीश्वरी या जगदीश्वरी की घोषणा कर विद्वान लोग दिल्ली पति शाहजहां को ही विष्णु के समान मानने की स्थिति में जा गिरे थे।

इस भीषण दासता के कालखंड में शिवाजी का उदय हुआ। उन्होंने अपनी छोटी सी जागीर में स्वराज्य स्थापना का मंत्र फूंका। अपने पराक्रम और हृदय की निर्भय तेजस्विता से साथी संगी खोज लिये। आत्मविश्वास जगाया। स्वयं अपना उदाहरण उपस्थित कर अपने चारों ओर के समाज के अति सामान्यजन में पौरुष, पराक्रम तथा विजय की इच्छा का निर्माण किया। बिजली की चमक जैसी तेजी से शत्रुओं पर आक्रमण करने की कला सीखी और सिखाई। सैन्य संचालन और मोर्चेबंदी की ऐसी विलक्षण कला निर्माण की कि उनके चुने हुए घोड़े से साथी विशाल मुगलवाहिनियों को छकाने लगे। सुदृढ़ सावधानी और नीति निपुणता के साथ उन्होंने आक्रमणकारियों के हौसले पस्त कर दिये। थोड़े ही कालखंड में हर हर महादेव का जयनाद गूंजने लगा ओर हिन्दू पदपादशाही की स्थापना का स्वप्न साकार हो उठा। हिन्दुओं का स्वतंत्र राज सिंहासन निर्माण कर उन्होंने स्वयं का राज्याभिषेक कराया। आत्मविश्वास का कलश राष्ट्रीय गौरव के मंदिर पर चढ़ा दिया। उत्तम शासन व्यवस्था का निर्माण किया। मुगल पठान, हाजी, अंग्रेज, फ्रंच, डच, पुर्तगाली सभी खूंखार जातियों को उनके समक्ष नतमस्तक होकर उपस्थित होना पड़ा। इस प्रकार मानो कालचक्र को तेजी से घुमाकर उन्होंने कलियुग समाप्त कर सतयुग का निर्माण कर दिया। उनका यह कार्य युग परिवर्तनकारी था। राजा बनना या राज्यभिषेक होना तो इस कार्य की एक प्रतीकात्मक घोषणामात्र थी।

**श्रद्धा केन्द्र की स्थापना**

विगत 500 वर्ष से भारत में खेमे गाड़कर राज्य कर रही इस्लामी राज्यसत्ता के वैभव की बड़ी गहरी पकड़ हिन्दू समाज के मन पर आ जमी थी। इस दासता के गहरे कुसंस्कारों को धो डालने के लिए आवश्यक था कि हिन्दुओं की अपने स्वतंत्र राज्य के प्रति आस्था जगे। इसीलिए उन्होंने हिन्दू राज्य सिंहासन के रूप में एक श्रद्धा केन्द्र की स्थापना की। इसी महान उद्देश्य से शिवाजी ने राज्याभिषेक कराकर छत्रपति का गौरव धारण किया। छत्रपति शिवाजी महाराज की जय-जयकार के साथ हिन्दुओं में वह विश्वास जागा कि हिन्दुओं का भी सार्वभौम स्वतंत्र राज्य प्रस्थापित हो सकता है। शिवाजी महाराज के संपूर्ण ध्येयनिष्ठ जीवन से यह प्रमाणित है कि उनका यह सब कार्य व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से पूरी तरह अछूता था। हिन्दवी स्वराज्य का उनका कार्य संपूर्ण भारतवर्ष के लिए था। उनका संघर्ष पूरी तरह एक राष्ट्रीय संघर्ष था। उनके द्वारा संचालित प्रयत्न को एक राष्ट्रीय क्रान्ति ही कहा जा सकता है। इसीलिए छत्रपति केवल एक राज नहीं पूर्णरूपेण राष्ट्रपुरुष थे।

उनके सामने आराध्य देव के नाम किसी क्षेत्र विशेष अथवा जाति विशेष की मूर्ति नहीं थी तो संपूर्ण भारतवर्ष की अति तेजस्वी प्रतिमा ही जगमगा रही थी। हिन्दू राष्ट्र की पुनर्प्रतिष्ठा ही उनका लक्ष्या था। उनके द्वारा निर्मित इस भारत वर्षीय हिन्दू राष्ट्र की आकांक्षा के कारण ही उन्होंने और उनके उत्तराधिकारियों ने प्रयाग, काशी, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, पुष्कर तथा गढ़मुक्तेश्वर आदि तीर्थस्थानों को मुस्लिम आधिपत्य से मुक्त किया। धर्म के पुनरुद्धार का कार्य संपन्न हुआ।

उन्होंने बुदेलखंड के चम्पतराय और छत्रसाल को प्रोत्साहित किया। पंजाब में भी हिन्द ध्वज फहराये, राजस्थान के राजपूतों को राजसिंह संगठित करें, दक्षिण से जय नगर साम्राज्य के अवशेषों के राजागण भी पुनः खड़े हों, इन्हीं विचारों को लेकर वे आगरा गये थे। उनकी आगरा यात्रा का लक्ष्य अपने स्वातंत्र्य संघर्ष को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करना था। भूषण कवित ने भी कहा कि शिवाजी ने हिन्दुत्व स्मृति, पुरान तथा वेदों की रक्षा की और धर्म का

विनाश करने वाले सब अत्याचारियों का सफाया हो गया।

**योद्धा के साथ निर्माता भी**

इस व्यापक राष्ट्रीय दृष्टि का परिचय उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में दिया। उस समय मुगल राज्यसत्ता के द्वारा प्रचलित विदेशी राज्य प्रणाली को उन्होंने बदल डाला। भारतीय पद्धति के अनुसार राज्य शासन के प्रमुख आठ विभाग कर आठ आमात्यों को उन्हें सौंपा। उनकी यह अष्टप्रधान अमात्य संस्था प्राचीन भारतीय पद्धति को याद दिलाती है। उन्होंने एक राज भाषा कोष का निर्माण कराकर उसके द्वारा भाषा शुद्धि का प्रयत्न भी किया। सैन्य व्यवस्था, सेना दल और समुद्री बेड़े में भी उन्होंने विदेशियों की नकल नहीं की। भारतीय प्रतिभा और आत्मविश्वास के आधार पर ही नये-नये रूप खड़े किये।

**महान समाज सुधारक**

गुलामी के कालखण्ड में समाज में घुस आई खराबियों को निकालने में भी उन्होंने दक्षता और दृढ़ता का परिचय दिया। समुद्र यात्रा निषेध जैसी रूढ़ियों को उन्होंने हटाया। हिन्दू समाज से पतित हुए लोगों को अपने धर्म में वापिस लेने का कार्य स्वयं अपने हाथों से संपन्न किया। बजाजी निबालकर और नेताजी पालकर को शुद्ध कर हिन्दू बना लिया। इतना ही नहीं, उनके साथ अपने पारिवारिक संबंध जोड़कर उन्हें समाज में सम्मान का स्थान प्राप्त करवाया। जो लोग धोखे अथवा डर से अथवा छल प्रलोभन द्वारा अपने धर्म से च्युत होकर मुसलमान बन चुके थे उनका अपने समाज में वापिसी का मार्ग खोज निकाला।

**कठोर अनुशासन प्रिय**

शिवाजी महाराज अपने राजशासन में कठोर अनुशासन रखते थे। उनके अपने जीवन में भी कठोर अनुशासन भावना व्याप्त थी। इसीलिए वे बड़े-बड़े सेनापतियों को ठीक रास्ते पर लाने में कठोरता रखते थे। एक बार नेताजी पालकर से वे पूछते हैं कि निर्धारित समय पर क्यों नहीं पहुंचे? जानते नहीं कि यहां कर्तव्य से चूकने पर कठोर दण्ड मिलता है? प्रतापराव गुजर से उन्होंने दो टूक उत्तर मांगा किससे पूछकर तुमन शत्रु के सामने संधि प्रस्ताव रखा? अनाधिकार चेष्टा क्यों की? उन्होंने अपने पुत्र संभाजी को भी जब वह शत्रु से जा मिला तो पकड़वाकर जेल में बंद करवा दिया। वे पुत्र मोह में नहीं फंसे। अफजल खान के वध के बाद जब उसका लड़का फाजल खान भागता हुआ खंडू जी खोपड़े के द्वारा पकड़ा गया किन्तु खोपड़े ने उसे शिवाजी के सामने उपस्थित करने के बजाय रिश्वत खाकर छोड़ दिया तो शिवाी ने खोपड़े को फांसी की सजा दी।

स्वयं अपने जीवन में भी वे पूर्ण संयमी और निष्कलंक चरित्र का परिचय देते थे। कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधू जब बन्दी बना कर उनके लिए भेंटस्वरूप उपस्थित की गई तो उनहोंने आबा जी सोनदेव को हिदायत दी कि फिर कभी ऐसी गलती की तो कठोर दंड मिलेगा। ऐसा कहकर उन्होंने उस मुस्लिम कन्या को आदरपूर्वक वस्त्रालंकार भेंट देकर उसके घर भिजवा दिया। ऐसे कितने ही श्रेष्ठ गुणों से विभूषित उनके जीवन की घटनाएं आज भी कितना आल्हादकारी पवित्र संस्कार निर्माण करने वाली हैं। एक युग पुरुष की समग्र जीवन दृष्टि और समाज तथा राष्ट्र का नेतृत्व करने की क्षमता हम उनके जीवन में पाते हैं। उनका उदाहरण आज के अपने सामाजिक जीवन में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए कितना अनुकरणीय है।

**धर्म के लिए फकीरी धारण की**

ऐसे अतुलनीय गुणों से युक्त जीवन के धनी छत्रपति शिवाजी माहराज की दैनिक दिनचर्या पूर्णत: विवेकी और वैराग्यपूर्ण थी। जीवन का हर क्षण युद्ध में लगा होने के बाद भी अत:करण में वे सदैव ईशचिन्तन में ही लीन रहते थे। इसीलिए वे संत शिरोमणि रामदास, तुकाराम, मोरया गोस्वामी आदि साधु-संतों के चरणों में बैठने का समय निकाल पाते थे। शिवाजी महाराज का एक अति प्रसिद्ध वाक्य है- आम्हीं ध र्माकरता फकीरों धेतखी आहे। अर्थात् धर्मरक्षण के लिए हमने संन्यास ग्रहण किया है। इसी एक वाक्य से जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। देश, धर्म, भूमि के हितार्थ सर्वस्व बलिदान करने में जो अलौकिक आनंद होता है उसका अनुभव उन्होंने संपूर्ण राष्ट्र को कराया। इसीलिए पूर्ण विरागी शिवाजी ने अपने द्वार पर जय-जय रघुवीर समर्थ का घोष करते हुए आने वाले समर्थ रामदास स्वामी की झोली में संपूर्ण राज्य अर्पित कर दिया और संन्यास की याचना की। और बाद में उसी धर्म संस्थापना कार्य के लिए प्रतिनिधि के रूप में सेवाभाव से राज्य संचालन का गुरुतर भार संभाला।

आज जब कि चारों ओर स्वार्थ और सत्ता की अंधी दौड़ में भारत का नेतृत्व वर्ग खिंचा चला जा रहा है, छत्रपति शिवाजी महाराज का यह त्यागपूर्ण जीवन कितना अनुकरणीय है? ❐

# दो पेड़

■ गंगा प्रसाद सुमन

तालाब के एक किनारे पर एक विशाल पेड़ था, दूसरे किनारे पर उससे छोटा पेड़ था। विशाल पेड़ की लम्बी व मोटी डालियां दूर-दूर तक फैली हुई थीं। जड़ें मजबूत थीं। टहनियों पर पत्ती, फल, फूल खूब लदे हुए थे। वह पक्षियों की शरण स्थली भी बना हुआ था। वह अपने आपको जंगल का राजा समझता था। उसे स्वयं पर अपने बड़े होने का अभिमान घेरे हुए था।

विशाल पेड़ के आस-पास छोटे-छोटे नए पौधे भी उग आए थे, लेकिन पेड़ को अच्छा नहीं लगा। उनके प्रति उपेक्षा भाव ही रखता। उन्हें वह पनपने देना नहीं चाहता था। वह सोचता था कि यदि वे बड़े हो गए तो मेरा सुख-चैन छीन लेंगे। एक दिन जोर की हवा चली। विशाल पेड़ ने अपनी शाखाओं को जो-जोर से हिलाया, झकझोरा और अपनी मजबूत जड़ों से छोटे-छोटे पौधों को मसल डाला। स्वयं ही पानी और भोजन लेकर छोटे पौधों को मुरझाने के लिए विवश कर दिया।

तालाब के दूसरे किनारे छोटा पेड़ उगा हुआ था। उस पर भी हरियाली फैली हुई थी। वह भी फल-फूल से भरपूर था। उसके आस-पास भी छोटे-छोटे पौधे उग आए थे। वह उन्हें देखकर खुश होता। उन्हें स्नेह से स्पर्श करता, वार्ता करता, गले लगाता, अठखेलियां करता। तेज हवा चलती तो अपनी शाखाओं से उनकी रक्षा करता। गहरी जड़ों से तो स्वयं पानी और भोजन लेता तथा ऊपरी सतह की मिट्टी, पानी व भोजन उनके लिए छोड़ देता। अपनी सन्तान के समान उन्हें प्यार व दुलार करता। वे हरे-भरे रहते।

कुछ समय व्यतीत होने पर विशाल पेड़ के आस-पास की जमीन खाली होती चली गई। वर्षा से मिट्टी कटती गई। वह कांप उठा। वह सूखकर ठूंठ बनकर रह गया। छोटे पौधों का उसे आश्रय जो नहीं मिला था। वहां से पक्षी उड़ चले। स्वार्थी पेड़ अब धरती चूमने लगा। छोटा पेड़ अब भी हरयाली से भरपूर था। छोटे-छोटे पौधों की जड़ों ने परस्पर मिलकर दीवार बना दी थी। मिट्टी की मजबूती से अब वह स्थिर था। वर्षा से वह दृढ़तापूर्वक सामना करने में समर्थ था। झंझावात में वह अब भी शान से खड़ा था।

छोटे पेड़ के आस-पास खड़े पौधे हंसकर कहने लगे, सामने वाला विशाल पेड़ बड़ा अहंकारी था, अपने को जंगल का एकमात्र राजा समझता था। इसने छोटे पौधों को पनपने भी नहीं दिया। आज ठूंठ बनकर ठोकरें खा रहा है। कल को कुछ लोग आएंगे और इस ठूंठ को कुल्हाड़ी से काट काटकर चूल्हें में झोंक देंगे। स्वार्थी व अहंकारी को तो एकाकी का दंश लग जाता है। वह बड़ा होकर छोटों को जो भूल गया था। छोटों के प्रति उपेक्षा भाव रखने से तो बड़े-बड़े धराशायी हो जाते हैं।

***'अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ऐते'***

(ऋग्वेद 5/60/5)

न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। बन्धुत्व के सूत्र में परस्पर सब बंधे रहें। ❐

# जानें प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना को

■ अन्वी जैन

जीवन में निरंतर बदलाव के महत्त्व को समझते हुए, "स्वच्छ ईंधन, बेहतर जीवन" के नारे के साथ, भारत सरकार ने 1 मई, 2016 को "प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई)" की शुरुआत की। इस सामाजिक कल्याण योजना का मुख्य उद्देश्य शुद्ध पाककला ईंधन, विशेषकर एलपीजी, का उपयोग गांव और वंचित परिवारों में सुनिश्चित करना है, जो पहले परंपरागत ईंधन जैसे लकड़ी, कोयला और गोबर आदि पर आश्रित थे। इन परंपरागत ईंधनों का उपयोग ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता था और पर्यावरण की क्षति भी करता था। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में धूम्र रहित वातावरण बनाना है और 2019 तक पूरे राष्ट्र में रियायती दरों पर एलपीजी कनेक्शन प्रदान करके पांच करोड़ परिवारों, विशेषकर गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली महिलाओं, को योजना से लाभान्वित करना है। इसके मुख्य उद्देश्यों में महिलाओं को सशक्त बनाना, उनके स्वास्थ्य की रक्षा करना, अशुद्ध जीवाश्म ईंधन का उपयोग करने से उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं को कम करना, ईंधन का उपयोग और इससे होने वाले घरेलू प्रदूषण और स्वास्थ्य विकार से जुड़ी समस्याओं को सुधारना, और अशुद्ध पाककला ईंधन पर आधारित व्यापक निर्भरता से होने वाले पर्यावरण की क्षति को रोकना सम्मिलित है।

कार्यक्रम का लक्ष्य था कि मार्च 2020 तक 8 करोड़ एलपीजी कनेक्शन गरीब परिवारों को आवंटित किए जाएं। 7 सितंबर 2019 को, भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से औरंगाबाद, महाराष्ट्र में आठवाँ करोड़ एलपीजी कनेक्शन स्वयं हस्तांतरित किया। उज्ज्वला 2.0 ने पीएमयूवाई के अंतर्गत 1.6 करोड़ एलपीजी कनेक्शन के अतिरिक्त आवंटन प्रस्तावित किए, जिसमें प्रवासी परिवारों के लिए विशेष प्रावधान था। इसके अंतर्गत कनेक्शनों का लक्ष्य दिसंबर 2022 में प्राप्त हुआ, जिससे योजना के कुल कनेक्शनों को 9.6करोड़ तक बढ़ा दिया गया। भारत सरकार ने पीएमयूवाई के अंतर्गत अतिरिक्त 75लाख

कनेक्शनों की छूट की मंजूरी दी है, जिससे सामग्री लक्ष्य को 10.35करोड़ तक बढ़ा दिया गया है, और ये कनेक्शन वर्तमान में मुफ्त हो रहे हैं।

अन्य मुख्य पहलुओं में सम्मिलित हैं: गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले परिवारों को एलपीजी कनेक्शन सेवा उपलब्ध कराने के रुपये 1600 का वित्तीय सहारा प्रदान करना, जिसमें सिलेंडर के सुरक्षा शुल्क, दबाव नियंत्रक, बुकलेट, सुरक्षाहोज, अन्य सामग्री की लागते सम्मिलित हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत, तेल कंपनियां रीफिलिंग और चूल्हे खरीद के लिए व्याज-मुक्त ऋण प्रदान करती हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना विभिन्न प्रकार के वितरण के माध्यम से सभी गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले परिवारों को शामिल करती है, स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर विभिन्न आकारों के सिलेंडर (14.2 किग्रा, 5 किग्रा, आदि) बांटती है। इस योजना के लाभ वन्यजीय राज्यों के निवासियों के लिए भी हैं, जिन्हें 'प्राथमिकता राज्य' के रूप में लाभ मिलते हैं। इस पहल ने विफलताओं का सामना करने वाले लोगों की समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान किया है जिसमें जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, असम, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और त्रिपुरा के राज्य विशेष रूप से सम्मिलित हैं।

इस योजना के लाभ प्राप्त करने के लिए आवेदक को 18 वर्ष या उससे अधिक आयु की एक महिला होनी चाहिए, जो ग्रामीण इलाके में रहती है और गरीबी रेखा कार्डधारी होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, महिला आवेदक को देशभर में किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक में एक बचत बैंक खाता होना चाहिए, जिससे रियायत राशि प्राप्त करने में सहायक हो सके। आवेदन के परिवार के पास वर्तमान में कोई भी एलपीजी कनेक्शन नहीं होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिससे कि वे भाग लेने के लिए पात्र बन सकें। ये मापदंड समृद्धि-आर्थिक स्थितियों को पूरा करने वाली ग्रामीण क्षेत्रों की योजना में हिस्सा लेने के लिए योग्य महिलाओं की ओर दिशा प्रदान करते हैं ओर जिनके पास पहले से एलपीजी की सुविधाएं नहीं हैं।

समापन में, इस योजना का प्रभावी निर्वाह "गिव-इट-अप" अभियान के माध्यम से बचे हुए एलपीजी रियायत में बचत के धन का उपयोग करके संभव हुआ। इस अभियान की शुरुआत के बाद 1.13 करोड़ नागरिको ने स्वैगच्छिक रूप से रियायत का त्याग किया है, एलपीजी सिलेंडर्स को बाजार मूल्य पर खरीदने का चयन करते हुए। 15 फरवरी 2024 तक, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत कुल 1,02,22,83,333 कनेक्शन वितरित किए गए हैं। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने इस योजना के अंतर्गत 75लाख महिलाओं को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन प्रदान करने की केंद्र सरकार को प्रतिबद्धता की है, जिसका वितरण 2026 तक योजनित है। इस पहल को सुनिश्चित करने के लिए, सरकार ने सरकारी ऑयल कंपनियों को 1,650 करोड़ रुपये का समर्थन दिया है। यह प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के मुख्य लक्ष्यों के साथ मेल खाता है एवं महिला सशक्तीकरण और स्वच्छ पाकशासन ईंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल को दर्शाता है। ❐

## मैं देखूँ

– सरोजिनी चौधरी

मैं देखूँ खिलती कलियों सी
अधरों की मुस्कान,
देखूँ मलय पवन का सौरभ
नदियों का मृदु कल-कल गान
या देखूँ मैं दुख की साँसें
उर पंजर में हुई जो म्लान,

देखूँ मैं विहगों का कलरव
प्रातः का जो करते आह्वान
या देखूँ संतप्त हृदय को
माँग रहा जो सुख का दान,

देखूँ इन्द्रधनुष को नभ पर
रंग बिखेरे कर अभिमान
या देखूँ करुणा की आभा
दुख से सिंचित घूँट का पान,

देखूँ मैं विस्तार प्रकृति का
क्षण में नवीन क्षण में अवसान
या देखूँ आलोक चन्द्र का
ज्योति जो देता सकल जहान,

देखूँ मैं भँवरों का गुंजन
घूम-घूम मधु करते पान
या देखूँ परिवर्तन प्रति पल
जग करता जिसका अभिमान,

मत देखो संतप्त हृदय को
मत देखो तुम पंजर म्लान
मत देखो करुणा की आभा
मत देखो क्षण-क्षण अवसान,

तुम देखो विहगों का कलरव
तुम देखो मृदु कल-कल गान
तुम देखो नभ इन्द्रधनुष को
रंग बिखेरे कर अभिमान,

अच्छा देखो अच्छा सोचो
प्रतिपल अधरों पर मुस्कान
निज मन पागल मत भटकाओ
औरों का भी कर सम्मान। ❐

# गरिमा के स्वर : कवयित्री सम्मेलन

गत दिनों दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'गरिमा के स्वर' नाम से कवयित्री सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा मोहन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार श्रीमती सुमन दीक्षित उपस्थित थीं। सान्निध्य डॉ. कुसुम लुनिया, सुपरिचित समाज सेवी एवं साहित्यकार का प्राप्त हुआ। कवयित्री सम्मेलन का संचालन प्रो. रवि शर्मा मधुप एवं प्रो. रचना विमला ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. वीणा गौतम एवं वरिष्ठ कथाकार डॉ. सविता चढ्ढा को वागीश्वरी सम्मान से सम्मानित भी किया। इस अवसर पर आमंत्रित कवयित्रियों ने अपने काव्य पाठ से सभी का मन मोह लिया।

डॉ. कीर्ति काले – सुनो छत्रपति वीर शिवाजी की हिन्दू हुंकार। जिसके कारण थर थर कांपी मुगलों की तलवार।

डॉ. सरिता शर्मा – नेकियों से कैसे यह वदी हो गई, ऐ समन्दर यह क्या त्रासदी हो गई।

डॉ. नीलम वर्मा – खिजा ने जब से गुलिस्ता को खाक कर दिया। मैं भीखी आंखों में बहार रखती हूँ।

श्रीमती पूनम माटिया – यह माना कि दूर है मंजिल बहुत, मगर मुझे तो पाना है। नदी सी बह रही हूँ समन्दर को पाना है।

डॉ. पूजा भारद्वाज – वंदन है, भक्ति है, सांसों की युक्ति है, खड़ी रही दो राहों पर जिन्दगी एक मुक्ति है।

श्रीमती सुधा संजीवनी – पुकारा आपने ऐसे के, हम दौरे चले आए। आपका प्यार पाया, भुला सारा गम चले आए।

श्रीमती अंजू खरबंदा – जीना चाहती है अब खुद के लिए! जो हमेशा चली उँगली पकड़कर कभी पिता कभी भाई, कभी पति कभी बेट की आज जाग है अपने लिए, ये पैंतालीस साला औरतें।

कार्यक्रम में डॉक्टर हरि सिंह पाल, श्री नवरत्न अग्रवाल, श्री राकेश शर्मा, श्री ओंकार त्रिपाठी, श्री गजेन्द्र सोलंकी, डॉ. संजीव सक्सेना, श्री अनिल गुप्ता, श्री वरूण गौतम, श्री प्रेमशंकर 'प्रेम', सुश्री कल्पना मिश्रा, आदि अनेक साहित्यकार, पत्रकार एवं हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। ❐

## सेवा भारती ने स्थापित किए CAA हेल्प डेस्क

भारत सरकार ने विशाल हृदय दिखाते हुए हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं बांग्लादेश के अल्पसंख्यक समुदाय के लिए भारत का नागरिक बनने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है CAA लागू करके। उसी क्रम में दिल्ली में सेवा भारती के नेतृत्व में 6 स्थानों पर मुख्यत: रोहिणी सेक्टर-11, आदर्श नगर, मजनू का टीला, भाटी माइन्स, सिग्नेचर ब्रिज पर CAA हेल्पडेस्क शुरू किया जा चुका है। प्रत्येक केंद्र पर 15 से अधिक कार्यकर्ता पोर्टल पर दिन-रात पंजीकरण के लिए सेवा दे रहे हैं। तमाम कागजातों को संकलित कर उन्हें व्यवस्थित ढंग से नागरिकता के लिए पंजीकृत कराने में विस्थापित परिवारों को मदत पहुँचाई जा रही है।

# परिवार मिलन कार्यक्रम
## सेवा भारती दिल्ली प्रान्त

***इन्द्रधनुषी रंगों से रंगा,***
***होली का यह त्योहार।***
***रंग बिना बेरंग है जीवन,***
***रंग ही जीवन का आधार।***

हमारी सनातन संस्कृति में यूं ही किसी भी त्योहार को नहीं मनाया जाता। हर पर्व और त्योहार का कोई ना कोई वैज्ञानिक महत्व अवश्य होता है। इसी प्रकार हिन्दू वर्ष के समापन में होली का त्योहार मनाते है। होली का नाम सुनते ही मन हर्षोल्लास से भर जाता है और हम रंगों का अनुभव करने लगते हैं। भगवान नारायण ने राम और कृष्ण दोनों अवतार के लिए जिस धरती को चुना वह गौरव उत्तर भारत को ही प्राप्त है। शायद इसीलिए इस त्योहार को उत्तर भारत में सबसे ज्यादा मनाया जाता है। होली के बाद से ही ऋतु परिवर्तन प्रारंभ हो जाता है। क्योंकि हर रंग का एक अपना मनोविज्ञान है। उसका सीधा असर मन पर होता है। इसलिए हर रंग कुछ कहता है और जब सब रंग मिल जाए तो मनुष्य का मन भी सारे भेदभाव मिटाकर रंगों में रंग कर समरस हो जाता है।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित सभी प्रकल्पों, केन्द्रों एवं सेवा बस्ती में होली के अवसर परिवार मिलन कार्यक्रत आयोजित किया जाता है जिसमें हजारों लोग सम्मिलित होते है। मिलते ही कुशलक्षेम पूछते है, गुलाल लगाकर शुभकमाना के साथ मुंह मिठा करवाते है।

इस सबके बाद सेवा भारती दिल्ली प्रान्त द्वारा भव्य होली /परिवार मिलन प्रान्त स्तर पर आयोजित किया जाता है। इस बार यह मिलन कार्यक्रम 23 मार्च 2024 को प्रान्त कार्यालय में आयोजित किया गया। सभी को चन्दन लगाकर स्वागत किया गया। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोक गीत, फाग, के साथ ही सभी को चन्दन, गुलाल एवं फूलों द्वारा अभिवादन करते है। विभिन्न समुदायों को एक सूत्र में बांधने का काम किया जाता है। इस कार्यक्रम में सेवा भारती द्वारा सभी को सपरिवार आने की निमंत्रण देते है। बड़ी संख्या में लोग पहुंचते है। खास तौर पर बच्चों के लिए खेलने, फोटो खिचवाने एवं कुछ उपहार भी दिये जाते है। सभी आन्दित होकर झूम उठते है। साथ ही अनेक प्रकार से रूचिकर भोजन, मिष्ठान, ठण्डाई से स्वागत किया जाता है। ❐

# होली मिलन कार्यक्रम

**स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प**

दिनांक 19 मार्च 2024 को सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प के बाबा बालक नाथ सेवा केन्द्र, सपेरा बस्ती, गाजीपुर में होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें केन्द्र में अध्ययनरत बच्चों को मिष्ठान एवं गुलाल का एक-एक पैकेट दिया गया। कार्यक्रम में प्रकल्प की कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती सुषमा गुप्ता, शिक्षिकाएं, मोहिनी शर्मा एवं प्रोमिला रावत जी ने भाग लिया। इसके पश्चात छात्रों के अभिभावकों को भी गुलाल का पैकेट तथा मिष्ठान दिया गया तथा उमंग और उल्लास के साथ होली मिलन का कार्यक्रम मनाया गया।

दिनांक 23 मार्च 2024 को स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प के महाराणा प्रताप सेवा केन्द्र, गोकुलपुरी मेरा घुमंतू समाज की झुगी बस्ती में होली मिलन का कार्यक्रम हुआ। इसमें केन्द्र में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को मिष्ठान एवं गुलाल का एक-एक पैकेट दिया। कार्यक्रम बच्चों के परिवार के लोग भी शामिल हुए।

गत 20 मार्च को सेवा भारती के स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प केंद्र, कलंदर कॉलोनी में होली का कार्यक्रम दो पालियों में मनाया गया। प्रथम भाग प्रात: 11.30 बजे से प्रारंभ हुआ, जिसमें कार्यकारणी के सदस्य (श्रीमान मदन लाल खन्ना जी, श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता जी, श्री योगेंद्र पाल सलोटा जी, श्री अविनाश गुप्ता जी, श्री विजय महाजन जी, श्री विनोद जैन जी, श्री राम वकील भारती जी, श्री अशोक जी, श्रीमती सुषमा गुप्ता जी आदि) केंद्र के शिक्षक-शिक्षाकाएं और 65 छात्रों ने भाग लिया। सभी बच्चों को एक-एक गुलाल का पेकेट तथा मिष्ठान दिया गया। कार्यकारिणी के सदस्यों में भी गुलाल एवं मिष्ठान का वितरण किया गया।

कार्यक्रम का दूसरा भाग दोपहर 2:30 बजे प्रारंभ हुआ। इसमें केंद्र में अध्ययन करने वाली छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में कार्यकरिणी के सदस्य भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में लगभग 130 लोगों ने भाग लिया एवम सहर्ष होली का कार्यक्रम मनाया। उसके बाद उपस्थित सभी लोगों को एक-एक पेकेट गुलाल एवं मिठाई दी गई। इस प्रकार सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प के विभिन्न केन्द्रों ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़े उमंग और उल्लास के साथ रंगोत्सव का यह त्योहार मनाया।

**पूर्वी विभाग**

गांधी नगर जिले में 23 मार्च को सभी केन्द्रों पर शिक्षिका और कार्यकर्ताओं ने मिलकर होली मिलन कार्यक्रम किया। कड़कड़डूमा केन्द्र की शिक्षिकाएं और बच्चों ने मिलकर सहभोज कार्यक्रम रखा साथ में सभी को होली की शुभकामनाएं दीं।

शाहदरा जिला आनंद विहार जेजे कैम्प के शिव भारती केंद्र पर शिक्षिका और बच्चों ने होली का पर्व मनाया।

इन्द्रप्रस्थ जिले के सभी केन्द्रों पर होली कार्यक्रम और सहभोज हुआ। कार्यकर्ताओं का केन्द्रों पर प्रवास रहा।

मयूर विहार जिले के सभी केन्द्रों पर होली का त्योहार बस्ती के लोगों, बच्चों एवं कार्यकर्ताओं ने मनाया।

जगदम्बा सेवा केन्द्र में सिलाई की कक्षा में उसके बाद मन्दिर में भजन मंडली की बहनों के साथ कीर्तन में होली मिलन का गीत हुआ। अन्त में 108 माला राम नाम का जाप हुआ, प्रसाद वितरण हुआ। ❐

# सोनिया ऐसे बनी शिक्षिका

■ प्रस्तुति : नीतू शर्मा

सेवा भारती अपने विभिन्न प्रकल्पों के द्वारा लोगों के जीवन में परिवर्तन लाती रहती है। ऐसा ही परिवर्तन आया है सोनिया के जीवन में। सोनिया पिछले 5 साल से सेवा भारती से जुड़ी हैं। पहले 2 साल वे मेंहदी की कक्षा में सेवितजन थी। अब आजकल इसी केन्द्र पर शिक्षिका बन गई है। सेवितजन से सोनिया शिक्षिका कैसे बनी? आइए सुनते हैं उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी-

नमस्ते- मैं सोनिया आप लोगों के साथ अपने जीवन की एक छोटी सी कहानी बताने जा रही हूं। जिसने मेरे जीवन की दिशा बदल दी और मुझे स्वावलंबी बनाया। जब मैंने अपनी 12वीं कक्षा की परीक्षा दी तो उसके बाद खाली समय में मैं कुछ करना चाहती थी, तब मुझे सेवा भारती के बारे में पता चला। मैंने सेवा भारती के गांधी नगर जिले के केन्द्र में मेंहदी की कक्षा लेनी शुरू कर दी। मुझे यहां का वातावरण बहुत अच्छा लगा। यहां मेंहदी के अलावा और भी बहुत कोर्स सिखाए जाते हैं। सभी शिक्षिकाओं का व्यवहार भी मुझे बहुत पसंद आया। इसलिए सेवा भारती को छोड़ने का मेरा मन भी नहीं किया। मैंने अपना मेंहदी का कोर्स पूरा करने के बाद गांधी नगर जिले के केन्द्र में शिक्षिका बन गई। यहां बहुत से ऐसे कोर्स हैं, जिन्हें सीखकर गरीब परिवारों के बच्चे स्वावलंबी बन सकते हैं। ये कम पैसों में अच्छा कोर्स कराते हैं। इसलिए मैंने अपने आस-पास के लोगों को भी सेवा भारती के बारे में बताया। मेरे पड़ोस में से अब कई बच्चे मेंहदी, कम्प्यूटर का कोर्स कर रहे हैं। अब तो मैं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेती हूं।

मुझे सेवा भारती का काम करने में बहुत खुशी मिलती है। मेरे अंदर सेवा का भाव भी भर रहा है। जिससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन आया है। मेरे माता-पिता भी इससे बहुत खुश हैं। मैं सेवा भारती के कार्यकर्ताओं का बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे शिक्षिका बनाया।

## चिकित्सा सेवा केन्द्र का शुभारंभ

गत 8 मार्च शुक्रवार को लालबाग बस्ती (नगर-मानसरोवर पार्क, जिला-रोहतास नगर) में साप्ताहिक स्वास्थ्य केन्द्र का शुभारंभ किया गया। इस केन्द्र का संचालन डॉ. अजय जी और डॉ. मनीष जी (इहबास) करेंगे। व्यवस्था की दृष्टि से लालबाग बस्ती में से ही शंकर जी का सहयोग मिलता रहेगा। केन्द्र की संचालन टोली में श्री अशोक जी (प्रांत आर्थिक टोली सदस्य), श्री राजेन्द्र जी, नगर अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्र जी (जिला सेवा प्रमुख) का सहयोग मिलता रहेगा। स्वास्थ्य केन्द्र में 65 मरीजों को स्वास्थ्य जांच के उपरांत नि:शुल्क दवाई दी गई। यह केन्द्र साप्ताहिक रूप में शुक्रवार को अपराह्न 3.00 बजे से संचालित रहेगा। इस सेवा बस्ती में 300 के करीब झुग्गियां हैं। ❐

# सामूहिक विवाह के समाचार

फुलेरा दूज के परम पवित्र अवसर पर सेवा भारती उत्तम जिला (पश्चिमी विभाग) द्वारा पांच अभावग्रस्त कन्याओं का सामूहिक विवाह समारोह बड़े धूमधाम से श्री सनातन धर्म मंदिर ट्रस्ट उत्तम नगर के परिसर में सम्पन्न हुआ। मंदिर के प्रधान श्री राम अवतार, कोषाध्यक्ष श्री सुदर्शन तथा मंदिर की महिला समिति के साथ-साथ मंदिर के अन्य गणमान्य लोगों का भरपूर सहयोग मिला। सभी कार्य समय से सम्पन्न हुआ। सेवा भारती पश्चिमी विभाग से अध्यक्ष श्री धर्म देव चौधरी की उपस्थिति सराहनीय रही। प्रांत मंत्री श्रीमान शैलेन्द्र विक्रम ने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। पश्चिमी विभाग से श्री अनिल निगम और श्री राजीव बतरा का सहयोग सराहनीय रहा। उत्तम जिले से संरक्षक श्री हरजीत लाल भाटिया, श्री बृज लाल मग्गो, श्री तारक नाथ और महिला समिति से श्रीमती रामेश्वरी, माधुरी जी, अल्का जी, आरती सिंह जी, पूजा गुप्ता जी तथा अन्य बहनों ने अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिले की सभी शिक्षिकाएं पूरे मनोयोग से कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु हरसंभव तत्पर रहीं। निरीक्षिका श्रीमती रंजना के कार्यों का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता। दिल्ली प्रांत से राजेन्द्र तिवारी जी सम्पूर्ण गतिविधियों में संलग्न रहे। इसके अतिरिक्त कुछ सेवित जन, अग्रवाल सभा तथा समाज के प्रतिष्ठित लोगों का अकथनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

**झण्डेवाला विभाग**

गत दिनों झण्डेवाला विभाग के करोलबाग जिले में सामूहिक विवाह आयोजित किया गया। इसमें समाज के सहयोग से अनेक जोड़ों का विवाह कराया गया।

**पूर्वी विभाग**

पूर्वी विभाग में सन् 2024 में 24वां सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। विभाग के चारों जिलों में जिलास्तर पर पहले मेंहदी और कहीं भात का भी आयोजन किया गया। बेटियों को मेंहदी लगाई गई। विवाह पूर्व सजाने का कार्य सौन्दर्य शिक्षिकाओं के सहयोग से किया गया। फिर विवाह के दिन सुन्दर वस्त्राभूषण और श्रृंगार करके तैयार किया गया। जिले और विभाग की समस्त कार्यकारिणी, शिक्षिका, निरीक्षिका, बन्धु और बहनों का सहयोग रहा। देवतुल्य दानदाताओं और अतिथिगणों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। सभी के सहयोग से सफल आयोजन सम्भव हो पाया। कुल 31 बेटियों का विवाह पूर्वी विभाग में कराया गया।

7 मार्च को हरि ओम मन्दिर गीता कालोनी में 7 जोड़ों का विवाह संपन्न कराया गया। 11 मार्च को राधा कृष्ण मन्दिर, पाण्डव नगर में 7, 11 मार्च को सैनी भवन, सैनी एनक्लेव में आठ, 12 मार्च को काली बाड़ी मन्दिर, न्यू अशोक नगर में नौ जोड़ों का विवाह कराया गया। इन चारों जिलों के सामूहिक विवाह में बाराती और घराती को लगाकर 3000 की संख्या को भोजन कराया गया। यह भोजन व्यवस्था दानीजन/दानदाता सर्वश्री राजीव गुप्ता जी एवं शम्मी भंडारी द्वारा की गई।

11 मार्च को शाहदरा जिला के सामूहिक विवाह को सफल बनाने में विभाग के अध्यक्ष श्रीमान विनोद बंसल, मंत्री श्रीमती राजश्री, जिले की पालक रुचि जी, संयोजक श्री राजेंद्र सोलंकी, सह संयोजक श्री पवन, घुमंतू परिवार के विभाग प्रमुख श्री महेश राजपूत, शाहदरा जिला के मंत्री सुखदेव जी, वरिष्ठ कार्यकर्ता संगीता बहन जी महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती हेमा शर्मा जी, महिला समिति की मंत्री एवं श्रीमती रीना सचदेवा जी, विभाग की सदस्य नीतू बहन जी, कोष प्रमुख नरेश जी, विभाग के खजांची प्रमुख सुरेश जी, सैनी भवन के प्रधान श्री जगमोहन जी, निरीक्षिका रेखा जी, सौंदर्य की शिक्षिका प्रीति जी, सौंदर्य सीखने वाले सभी बच्चे, सभी शिक्षिकाएं, शिक्षक के सहयोग से आठ जोड़ों का शादी का कार्य बहुत सुंदर रूप से संपन्न हो पाया। शाहदरा जिले में एक जोड़े का कन्यादान संघ के विभाग कार्यवाह श्री सतीश मित्तल जी और उनकी धर्मपत्नी के द्वारा किया गया। भाई साहब पूरे समय सामूहिक विवाह में रहे। मैं सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं साथ में विभाग के और जिले के सभी कार्यकर्ताओं का महिला समिति की सभी बहनों का साथ में सभी हमारे दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद।

इंद्रप्रस्थ जिले के सामूहिक विवाह के कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी कार्यकर्ताओं का योगदान रहा, विशेष रूप से हेमा उपाध्याय जी, नीलम राणा जी, अनुपमा जी, राधा जी, निरीक्षका, सभी शिक्षिका और विशेष रूप से हमारे अध्यक्ष श्री अखिल जी का विशेष योगदान रहा। मंत्री बिशन सिंह जी, नीलम राणा जी के पति श्री राणा प्रताप जी, जगदीश जी, श्री संदीप पांधीजी एवं सेवा भारती से नए जुड़े कार्यकर्ता श्री राजकुमार राणा जी, श्रीमती उपमा जी नोएडा से कई दानदाताओं को लेकर आई थीं।

मंदिर समिति एवं गुरुद्वारे की तरफ से भी बड़ा योगदान रहा। बारात को ठहराना, नाश्ता कराना, यह गुरुद्वारे की तरफ से रहा एवं मंदिर समिति की ओर से टेंट की व्यवस्था एवं पूरे कार्यक्रम को संभालने की जिम्मेदारी भी अच्छी तरह से निभाई। बारातियों को पूरे पांडव नगर में घूमाना और साथ-साथ रहना यह बहुत बड़ा कार्य मंदिर समिति ने किया।

**गांधीनगर जिला**

7 मार्च को जिले में सामूहिक विवाह का कार्यक्रम सफल बनाने के लिए सभी देवतुल्य कार्यकर्ताओं का बहुत-बहुत धन्यवाद। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में गांधीनगर के एस डी एम, ए सी पी गांधीनगर,एस एच ओ गीता कॉलोनी, हाई कोर्ट बार एसोसिएशन के एग्जीक्यूटिव मेंबर रहे। संघ से श्रीमान सतीश जी प्रांत विद्यार्थी कार्य प्रमुख का उद्‌बोधन एवं आचार्य विक्रमादित्य का आशीर्वचन रहा और अंत में फेरे और दहेज वितरण के साथ इस आयोजन का समापन हुआ। विभाग सहसंयोजक पवन कुमार जी एवं विभाग सह मंत्री बहन रुचि अग्रवाल जी के साथ अन्य कार्यकर्ताओं का धन्यवाद।

-मयूर विहार जिले में कालीवाड़ी मन्दिर न्यू अशोक नगर में सामूहिक विवाह 12 मार्च को आयोजित हुआ। भाई तरुण जी, भाई एल. एन. पांडे जी को सामूहिक विवाह कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा। मैं आप दोनों को आपकी सारी कार्यकारिणी के भाई/बहिन को शुभकामनाएं देता हूं बधाई देता हूं।

-विनोद बंसल

-मयूर विहार जिले की 9 बेटियों की शादी सुसंपन्न कराने के लिए सभी पदाधिकारी, मित्रों, कार्यकर्ता भाई बहनों, शिक्षिका और निरीक्षिकाओं एवं दानदाताओं को धन्यवाद और आभार।

# बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर संपन्न

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के लिए लगने वाले शिविरों में बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है। इसको ध्यान में रखते हुए प्रतिवर्ष की भांति दिल्ली सेवा भारती के दक्षिणी विभाग में बालक बालिका बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर का आयोजन 29 मार्च से 31 मार्च तक जी.एल.टी. सरस्वती बाल मन्दिर, नेहरू नगर में किया गया। इस शिविर के माध्यम से बाल संस्कार केंद्रों व विभिन्न 47 सेवा बस्तियों के 164 बच्चों को खेल ही खेल में भारत की संस्कृति और राष्ट्रवाद के भाव से जोड़ दिया गया। शिविर में सभी बालक बालिकाओं को संख्या और उम्र के अनुसार चर्चा के लिए पांच गटों और खेल के लिए भी पांच गणों में बाँटा गया था और उनका नामकरण निम्न प्रकार किया गया- रानी लक्ष्मीबाई, भगिनी निवेदिता, सरोजिनी नायडू, महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी।

शिविर का शुभारंभ शिविर की व्यवस्थाओं की सूचना के बाद गायत्री मंत्र के साथ दक्षिणी विभाग के माननीय विभाग कार्यवाह श्री रवि चोपड़ा जी के द्वारा किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में 'शिविर का महत्व' विषय पर अपनी बात रखी। इस सामूहिक सत्र के बाद जलपान के बाद एक घण्टे का शारीरिक और खेल सत्र रहा।

तत्पश्चात् शिविर का दूसरा सत्र चर्चा का रहा। चर्चा का विषय था 'मेरी दिनचर्या', जिसमें बालक और बालिकाओं के साथ मेरी दिनचर्या कैसी हो विषय पर चर्चा की गई तथा साथ में उनकी दिनचर्या बनाने में सहयोग कर उसको अपने जीवन में लागू करने का आग्रह किया गया। इसके लिए गट व्यवस्था में चार गट बनाए, जिनमें दो

बालकों के और दो बालिकाओं के गट थे। रात्रि भोजन के बाद रात्रि कार्यक्रम और फिर दीप विसर्जन के साथ पहला दिन समाप्त हुआ। अगले दिन प्रात: 5 बजे जागरण हुआ। खेल के साथ पूरे दिन की दिनचर्या में दो सामूहिक सत्र के साथ दो गटचर्चा सत्र रहे। सुबह के सामूहिक सत्र में श्री ब्रिजेश श्रीवास्तव जी, बदरपुर नगर के माननीय नगर संघचालक के द्वारा 'मर्यादा पुरषोत्तम भगवान श्रीराम' विषय लिया गया, जिसमें उन्होंने बहुत सहज और सरल तरीके से भगवान श्रीराम जी के जीवन को बताया।

दिन के पहले गट चर्चा सत्र में विषय 'आदर्श हिन्दू परिवार' रहा। इसमें संयुक्त परिवार और उनके घर में मन्दिर, रोज पूजा, घर में धर्म ग्रंथ, तुलसी के पौधे का महत्व तथा आवश्यकता को बताया गया। घर में साक्षात गऊ माता न हो तो गऊ माता की फोटो होनी चाहिये। ऐसे अनेक बिंदुओं के साथ चर्चा के माध्यम से विषय को समझाया। सायं के दूसरे सामूहिक सत्र में सेवा भारती दिल्ली प्रांत के सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी ने 'मेरा देश सोने की चिड़िया' विषय लिया। उन्होंने बालक बालिकाओं के साथ प्रश्नोत्तरी के माध्यम

से विषय को समझाया। एक अन्य गट चर्चा उम्र और कक्षा अनुसार रही। इस चर्चा सत्र का विषय बालिकाओं के लिए 'किशोरी विकास' और और बालकों के लिए 'परिवार एवं समाज में मेरा व्यवहार' विषय लिया गया। दिन में गट अनुसार सभी बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। रात्रि में बाल सभा कार्यक्रम का आनंद भी बालक बालिकाओं द्वारा लिया गया।

अन्तिम दिन भी सुबह पांच बजे जागरण हुआ तथा शारीरिक व खेलों के सत्र के बाद अल्पाहार दिया गया जिसे बालक बालिकाओं ने खूब पसंद किया। अन्तिम दिन दो सामूहिक सत्र और एक गट चर्चा सत्र किए गए। पहले सत्र का विषय था 'सेवा भारती परिचय' जिसको गट अनुसार ही शिक्षिका बहनों द्वारा लिया गया। इसमें बालक बालिकाओं को सेवा भारती की स्थापना और सेवा भारती द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की जानकारी से परिचित कराया गया और सेवा के प्रति बालक बालिकाओं में भाव जागृत किया गया।

दिन का दूसरा सामूहिक सत्र सेवा भारती दिल्ली प्रांत के महामंत्री श्री सुशील जी द्वारा 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर लिया गया, जिसको उन्होंने रोचकता के साथ पूर्ण किया। दिन में दूसरी गटचर्चा का विषय था 'जल संरक्षण और पर्यावरण एवं स्वच्छता।' इस विषय को बालक और बालिकाओं ने चर्चा में भाग लेते हुए भली-भांति समझा।

अंत में समापन सत्र रहा जिसे सेवा भारती दिल्ली प्रांत के सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी ने लिया। उन्होंने बालक बालिकाओं से बातचीत करते हुए शिविर की चर्चा की। शिविर में तय कार्यक्रमों सामूहिक सत्र, गटचर्चा, खेलों इत्यादि विषय में बच्चों से जानकारी ली और बच्चों ने भी उत्साह में पूरे जोश के साथ सभी विषयों पर अपने विचार बताए।

शिविर में वर्गाधिकारी रहीं श्रीमती शीला विश्वकर्मा जी ने शिविर का पूर्ण वृत प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि शिविर में 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के (79 बालक और 85बालिका) कुल 164 बालक बालिकाओं ने हिस्सा लिया। विभाग तथा जिलों से कुल 20 भाई एवं बहन कार्यकर्ता और 15 शिक्षिका, निरीक्षिका बहनें पूरे समय शिविर में रहकर शिविर के कार्यक्रमों और व्यवस्थाओं में लगे। शिविर के सर्व व्यवस्था प्रमुख श्री भवनीश जी कालकाजी जिले के मंत्री, विभाग और सभी तीनों जिले के कार्यकर्ताओं और शिक्षिका एवं निरिक्षिका बहनों के साथ बहुत सुन्दर, व्यवस्थित और अनुशासित रूप से शिविर के संचालन में सहयोग किया।

उन्होंने बताया कि इस शिविर में सेवा भारती के तीन छात्रावासों स्वामी विवेकानंद, गोपालधाम और अपराजिता की बालक-बालिकाएं भी सम्मिलित हुईं।

अंत में दक्षिणी विभाग के अध्यक्ष डॉ अनंगपाल जी ने सभी का धन्यवाद किया।

उन्होंने विद्यालय प्रशासन, शिविर में आए सभी वक्ताओं, अतिथियों, कार्यकर्त्ताओं और शिक्षिकाओं का धन्यवाद किया। सभी बालक बालिकाओं के माता-पिता का भी धन्यवाद किया कि उन्होंने अच्छी संख्या में बच्चों को भेजकर शिविर को सफल बनाया। सेवा भारती के एक दानदाता श्रीमती प्रियंका निझावन जी और शिव निझावन जी के द्वारा बच्चों को प्रोत्साहन हेतु रिफ्रेशमेंट पैकेट भी वितरित किए गए। कल्याण मंत्र के साथ शिविर का समापन हुआ। ❐

# यह है नवरात्र का संदेश

अप्रैल माह में होता है मां दुर्गा के पवित्र नौ दिनों का आगमन और हम पूर्ण उत्साह के साथ देवी का स्वागत करते हैं। हमारे समाज में नवरात्रि को विशेष महत्व दिया गया है और अगर इसका सार समझें तो यह स्त्रियों के सशक्तिकरण से जुड़ा हुआ है। हमारे पूर्वज हर विषय पर बहुत सजग रहे और आने वाली पीढ़ियों के उत्थान के लिए ऐसे धर्म सम्मिलित नियम बनाए जिससे जीवन की बागडोर अबाधित चलती रहे, परन्तु विडम्बना यह है कि हम बेसमझ, अपनी सुन्दर रीतियों एवं मान्यताओं का महत्व जाने बिना उन्हें बस कार्यान्वित कर रहे हैं। मैंने अपने एक पहले लेख जो कार्तिक माह के महत्व से सम्बंधित था, में भी इस तरफ इशारा किया है कि कार्तिक की कहानी सुन और सुनाकर इतिश्री न करें उसमें बताये प्राकृतिक महत्व से जुड़ें और उस अनुसर आचरण करें।

इसी प्रकार मां दुर्गा के नौ दिन स्त्रियों के सशक्त होने और उनके प्रति सम्मान को प्रकट करता है, जबकि वास्तविकता में हम इसका पालन नहीं करते। हम मंदिर में देवी के आगे सिर झुकाते हैं परन्तु अपने घर की स्त्रियों का लगातार अपमान और प्रताड़ित करते रहते हैं। आप स्वयं सोचिए जहां स्त्रियों का का सम्मान न हो, बात करने की स्वतंत्रता न हो, तिरस्कार हो वहां आप जितनी चाहे मां दुर्गा की स्तुति, गुणगान, कीर्तन करें मां प्रसन्न हो आशीर्वाद नहीं देने वाली। छोटी बच्चियों से दुराचार कर, एक दिन कंजके करके स्वयं को मूर्ख बनाने के सिवाय कुछ नहीं कर रहे। हम प्रतिबद्ध रहें कि हमारे समाज की स्त्रियां अपने आसपास के वातावरण में सुरक्षित एवं सहज हैं, स्त्रियां सिर्फ ऊपरी दिखावे के लिए ही खुश नहीं परन्तु भीतर से भी उतना ही शांत प्रसन्नचित्त है। मां दुर्गा, मां अम्बे, मां गौरी की अराधना करने के साथ अपनी बेटियों, अर्धांगिनी, बहनों एवं अपनी माता को सम्मान एंव आदर दें, ताकि देवी स्वयं आकर आपके घर विराजें एवं आपका मंगल स्वयं करें।

– ***अंजली अंश***

# पूर्वी विभाग में प्रशिक्षण वर्ग

सेवा भारती पूर्वी विभाग का प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 30 मार्च को प्रात: 10.30 से 5.30 तक रहा, स्थान विवेकानंद आश्रम नजदीक खुरेजी पेट्रोल पम्प। इसमें विभाग, जिला, नगर के 53 कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। प्रांत से सहसंगठन मंत्री श्री सुनील जी का उद्‌बोधन रहा। विषय रहा– सेवा भारती का विस्तृत परिचय, कार्यकर्ता के गुण, दायित्व व दायित्व बोध, आर्थिक पक्ष, जिला स्वावलंबी कैसे बने, प्रवास, कार्य विस्तार। विषयों को विभाग के कार्यकर्ताओं ने प्रतिपादित किया। इनमें राजश्री जी, विभाग मंत्री, संगठन मंत्री विनोद जैन व सह मंत्री केडीपी यादव जी व रुचि अग्रवाल जी रहे। अंत में प्रांत से सहसंगठन मंत्री श्री सुनील जी ने जिला अनुसार खेल खिलाएं, जिसमें नुक्कड़ नाटकों द्वारा प्रभावी रूप से कार्यकर्ताओं ने अपने विषयों को चित्रित किया, जो कि विशेष प्रभावशाली रहा। सभी ने सराहना की। इसमें कार्यकर्ताओं की रचनात्मक सोच व उसका क्रियान्वयन विशेष देखने लायक थे। व्यवस्था प्रमुख श्री सुरेश गुप्ता जी व महेश राजपूत जी द्वारा अल्पाहार, भोजन इत्यादि की उत्तम व्यवस्था की गई। ❐

# चैत्र नवरात्रे

धर्म, संस्कृति, संस्कारों से परिपूर्ण है- हमारा सनातन धर्म। ऐसी परिपूर्णता के रहते सनातन धर्म में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। सभी त्योहार पूजा-पाठ, हवन आदि से जुड़े हुए हैं। वर्ष में दो बार आते हैं नवरात्रे। एक शरदकालीन और दूसरे ग्रीष्मकालीन नवरात्रे। शरद कालीन नवरात्रे आश्विन मास में आते हैं और ग्रीष्मकालीन नवरात्रों को चैत्र नवरात्रे भी कहा जाता है। क्योंकि इस माह में गर्मी का आरंभ बढ़नी शुरू हो जाती है।

सर्वविदित है कि नवरात्रों में माँ जगदम्बा की पूजा, अर्चना होती है। सभी भक्त अपनी परंपराओं के अनुसार और अपनी क्षमता शक्ति से देवी जी को प्रसन्न करने का प्रयास करते है। माँ जगदम्बा के अनेक नाम हैं अनगिनत मंत्र हैं। सभी मंत्र, सभी नाम और सभी देवी स्थान माँ का आशीर्वाद देने वाले हैं। अधिकांश भक्तजन नौ दिन तक व्रत रखते हैं। सिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक साधक कठोर तप करते हैं, देवी, पुराण और दुर्गा सप्तशती आदि का पाठ करते हैं, हवन करते हैं, तात्पर्य यह है कि नवरात्रों के नौ दिन भक्तिमय होते हैं और सर्वत्र भक्तिमय वातावरण होता है। बाजार माँ की लाल चुनरियों तथा अन्य पूजा सामग्रियों से सज जाते हैं और मन्दिर में विशेष सजावट और नजारा देखते ही बनता है। कुछ अलग ही होता है। सबको देखकर स्वत: ही मन भक्तिमय होने लगता है। जय माता दी।

***-कारुन्या***


BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

**Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires**
**(Black and Galvonised)**

**Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires**
**(Black and Galvonised)**

**H.B. HHB & G.I. WIRES**

**Bansal Wire Industries Ltd.**
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

# विज्ञापन के लिए आग्रह

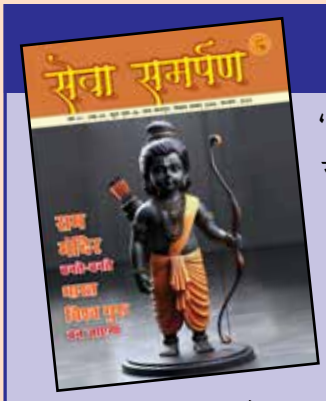


'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है।

आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

**संपर्क करें- सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001**

**फोन - 011-23345014-15**

# भव्य पग-फेरा कार्यक्रम

सेवा भारती दक्षिणी विभाग के सभी जिलों में अभावग्रस्त गरीब परिवार की 20 कन्याओं का सामूहिक विवाह, वसंत पंचमी 14 फरवरी 2024 को, 3 विभिन्न स्थानों पर भव्य कार्यक्रमों के रूप में आयोजित हुआ। अगली कड़ी में बेटियों के पग-फेरे का कार्यक्रम वीरवार, दिनांक 21 मार्च 2024 प्रातः 10.30 बजे से स्थान वृंदावन ग्राउण्ड, होटल गोल्ड फिच के सामने, सूरजकुंड रोड, पहले पेट्रोल पम्प के पास, लक्कड़पुर (सूरजकुंड के पास) फरीदाबाद में सम्पन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में नव-विवाहित जोड़ों के परिवारों से दो-दो सम्बन्धियों सहित लगभग 200 लोग उपस्थित रहे। हिन्दू परम्परानुसार नव-जोड़ों को उपहारों की भेंट दी गई। सेवा भारती द्वारा संचालित संवाकार्यों व पारिवारिक संबंधों की सूक्ष्मताओं को मंच से बताया गया। कार्यक्रम स्थल बहुत सुन्दर था। विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन इत्यादि की व्यवस्था सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री राकेश गुप्ता जी के द्वारा प्रायोजित थी, जिसकी सभी ने सराहना की। दिल्ली प्रांत की ओर से अंजू जी व श्री इन्द्रनील जी, विभाग के पूर्व अध्यक्ष श्री खजान सिंह शर्मा जी, वर्तमान अध्यक्ष श्री अनंगपाल जी, दक्षिणी विभाग कार्यवाह श्री रवि जी सहित विभाग, जिले, नगर के कार्यकर्ता व प्रमुख दानदाता व प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। ❐

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 अप्रैल, 2024, प्रकाशन तिथि-5 अप्रैल, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

**Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak**

**(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)**

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

**Pran Vayu Vahan**

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

**Community Empowerment**

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।